अमर जैन साहित्य संस्थान का ९वां रत्न

जीवन के अमृतकण

लेखक :
श्री गणेश मुनि शास्त्री

संपादक :
श्रीचन्द सुराना 'सरस'

प्रकाशक :
अमर जैन साहित्य संस्थान
उदयपुर [राजस्थान]

लेखक ※ गणेश मुनि शास्त्री, साहित्यरत्न

सपादक ※ श्रीचन्द सुराना 'सरस'

प्रेरक ※ जिनेन्द्र मुनि,

प्रकाशक ※ राजेन्द्रकुमार मेहता

मत्री अमर जैन साहित्य संस्थान

कोरपोल, वडाबाजार

उदयपुर [राजस्थान]

प्रथम सस्करण ※ विजयादशमी, १९७१

मूल्य ※ दो रुपया पचास पैसा

मुद्रक

रामजीकुमार शिवहरे,

मोहन मुद्रणालय

१३/३०९, नाई की मंडी, आगरा-२

जीवन के प्रबुद्ध कलाकारों को

"**जीवन के अमृतकण**" के लेखक है साहित्यरत्न; **श्री गणेश मुनिजी शास्त्री,** जिनकी अनेकानेक पुस्तके अब तक साहित्य-ससार मे ख्याति प्राप्त कर चुकी है। प्रस्तुत पुस्तक चिन्तनप्रधान रुपक, सस्मरण, सूक्तियाँ तथा वैज्ञानिक तथ्यो का एक सुन्दर सग्रह है, जो जीवन के अमृतकण बनकर पाठको के समक्ष उपस्थित हुआ है. पाठक इसमे देखेंगे कि एक-एक अमृतकण के रसास्वादन से जीवन मे अपूर्व जागृति, चेतना व उत्साह का सचार हो रहा है इसे एक बार पढकर ही सतोप नही होगा. जितनी बार पढा जायगा, जितना इसके विचारो पर चिन्तन किया जायगा, उतनी ही विशेप आनन्द की उपलब्धि होगी.

यद्यपि मुनिश्री जी का साहित्य उच्चस्तरीय विविध प्रतिष्ठानो से निकलता रहा है और प्रस्तुत सग्रह भी किसी अन्य सस्थान से ही निकलनेवाला था, किन्तु हमारी प्रार्थना पर ध्यान देकर उन्होने इसके प्रकाशन का दायित्व 'अमर जैन साहित्य सस्थान', उदयपुर को प्रदान किया, जिसके लिए हम उनके पूर्ण आभारी है

प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशन मे जिन धर्मप्रेमी वन्धुओ ने आर्थिक सहयोग देकर अपनी उदारवृत्ति व दानशीलता का परिचय दिया है उसके लिए हमारा सस्थान उन्हे धन्यवाद प्रदान करता है

निकट भविष्यमे ही मुनिश्री जी की कई महत्वपूर्ण जनोपयोगी कृतिया प्रकाश मे लाने का विचार कर रहे है यदि इसीप्रकार का आर्थिक सहयोग उदारचेता व्यक्तियो की ओर से अगले प्रकाशनो मे भी मिलता रहा तो हमे आशा ही नही, वरन् पूर्ण विश्वास है कि यह हमारा अभिनव सस्थान कुछ ही दिनो मे अपना विस्तृत क्षेत्र वनाकर सुन्दर से सुन्दर धार्मिक व आध्यात्मिक साहित्य द्वारा लोकसेवा कर सकेगा

राजेन्द्रकुमार मेहता
मंत्री—अमर जैन साहित्य संस्थान
उदयपुर [राजस्थान]

लेखक की कलम से

एक समय था जब साहित्यसर्जन के क्षेत्र में सूत्रशैली का प्रचलन था. छोटे-छोटे वाक्याशो और सदर्भों मे विशाल विचार-प्रवाह को बाँधा जाता था. अनुभव एव चिन्तन की अथाह गरिमा को शब्दो की लघुकथा मे भर दिया जाता था.

मध्ययुग मे लेखनशैली का विस्तार हुआ, मुद्रणसुविधा का विकास हुआ और उसके साथ ही साहित्यसर्जन की दिशा और रुचि मे भी परिवर्तन आया विशालकाय ग्रन्थो की रचनाएँ हुई छोटी-सी वात को भी उक्ति, युक्ति और पुनरुक्तियो द्वारा विराट् रूप देने की प्रवृत्ति वढी

आज फिर रुचि-परिवर्तन का समय आ चुका है पाठक पुन उसी प्राचीनशैली की ओर आकृष्ट हो रहे है विशालकाय ग्रन्थो को पढने की परपरा लुप्त हो रही है छोटे-छोटे वाक्य, लघु-सदर्भ और लघु-कथाएँ पढने की रुचि विकसित हो रही है और साहित्यकार भी इसी लोकरुचि के अनुसार अपनी शब्दसृष्टिका निर्माण करने मे सलग्न हैं

प्राचीन समय मे लेखन साधनो का अभाव था, इसलिए लघु सदर्भ एव लघुवाक्यो को पसन्द किया जाता था आज लोगो के पास समयका अभाव है, इस कारण गागर मे सागर की वात की जाती है पाठक चाहता है—'हित मित सारसमन्वितं वच.' उसे हितकारी, सारपूर्ण शिक्षाएँ पढने को तो मिले, पर वे 'मित' सक्षिप्त हो, सरल हो और रुचिकर हो

प्रस्तुत 'अमृतकण' के सचयन मे भी पाठको की यह

भावना मेरे समक्ष स्पष्ट रही है. कुछ वडी पुस्तके लिखने के बाद पाठकों की यह माँग आती रही कि छोटे-छोटे सारपूर्ण, शिक्षाप्रद विचारो का लघुकाय प्रकाशन भी आना चाहिए वडी पुस्तके फुर्सत के समय की प्रतीक्षा करती रहती हैं, किन्तु छोटी पुस्तके सफर मे, प्रतीक्षा के समय मे और आराम की घडियो मे भी पढ ली जाती हैं इसी विचार ने इधर मे दो-तीन पुस्तके लिखने की प्रेरणा दी **"जीवन के अमृतकण"** पाठको के हाथो मे पहुँच ही रही है इसके बाद **'प्रेरणा के बिन्दु'** और **'विचार दर्शन'** भी तैयार है

'जीवन के अमृतकण' मे मैंने प्राय उन्ही विचारो की व्यजना की है, जो जीवन निर्माण की दिशा मे प्रेरणा-दायी प्रतीत हुए है. जो घटनाएँ और सूक्तियाँ मेरी उन प्रेरणाओ को व्यक्त करनेमे सहायक लगी, उन्हे भी उद्धृत कर मैंने अपने कथ्य को अधिक से अधिक मनोहर, प्रेरक-रुचिकर' वनाने का प्रयत्न किया है मेरे जीवननिर्माण मे एव साहित्यिक प्रेरणाएँ जगाने मे श्रद्धेय गुरुवर्य **श्री पुष्करमुनिजी म०** का जो श्रेयोदान है, वह तो मेरे जीवन की थाती है, उन्ही का ही तो सव कुछ है, अत उनके उपकार, वात्सल्य और आशीर्वाद को मै प्रतिपल स्मरण करता रहता हूँ.

मेरे सकलित विचारो को भाव, भाषा और शैली की दृष्टि से परिमार्जित करने मे स्नेही **श्री श्रीचन्दजी सुराना 'सरस'** ने जो हार्दिक योगदान किया है, वह मेरे लिए स्मरणीय रहेगा उनकी सपादनकला सर्वविदित है मेरे मन मे उनके प्रति वहुत आदर है साथ ही **डा० तिवारीजी** को भी मैं स्मृति-पथ पर लाये विना नही रह सकता, जिन्होने मेरे आग्रह पर सारयुक्त भूमिका लिखकर पुस्तक की उपादेयता वढाई है

इस पुस्तक को प्रकाशन-पथ मे लाने की प्रेरणा और सहकार मेरे स्नेही **श्री जिनेन्द्र मुनिजी** का रहा है, यदि उनकी प्रेरणा न होती तो अभी कुछ समय तक **'जीवन के अमृत कण'** शायद पाठको के कर-कमलो मे नही पहुँच पाते. आशा और विश्वास है, पाठक इस लघु-कृति को पसन्द करेंगे और अधिकाधिक चाव से पढेगे

—गणेशमुनि शास्त्री

रक्षावन्धन

जैन धर्म स्थानक

१७० कादावाडी, वम्बई-४

ये 'अमृतकण'

वैशाली की नगर-वधू अम्बपाली के सौभाग्य से तथागत जब वैशाली आए तो उन्होने अपने हजारो शिष्यो के साथ उसीके रमणीय उद्यान मे विहार करने का निश्चय किया उसने जब सुना तो वह हर्ष-विभोर होकर सब कुछ भूल गई, तन के सुख को त्यागकर, मन के सुख के लिए महा-श्रमण की सेवा मे 'अमृत-उपदेश' का सरस पान करने वह दौड पडी भगवानकी अभ्यर्थनाके पश्चात् उसने उन्हे अपने राजप्रासाद मे आमन्त्रित किया भगवान ने उसके नम्र-निवेदन को स्वीकार कर लिया वहा बैठे वज्जिकुमार आश्चर्यचकित हो देखते ही रह गए उन्होने बहुत कोशिश की कि अम्बपाली का निमन्त्रण भगवान अस्वी-कार कर दे और उसके घर न जाएँ, किन्तु समदृष्टि बुद्ध ने वज्जिकुमारो की कोई भी बात इस सम्बन्ध मे नही सुनी और अम्बपाली ! वह तो 'उपदेश-अमृत' से आत्मभाव प्राप्त कर चुकी थी. उसने लोभ पर विजय पा ली थी राजकुमारो का कोई भी प्रलोभन उसे सुपथ

से हटा नही सका, वह अडिग रही उसने बडे अनुराग से भगवान का आतिथ्य किया और उसके बाद सब कुछ त्याग कर भिक्षुणी बन गई यह है 'अमृतकण' का प्रभाव तथागत का अमृतमय उपदेश उसके लिए वरदान सिद्ध हुआ

यह 'अमृतकण' का एक चमत्कार था जो 'अमृतकण' आपके हाथ मे है, उसमे एक सौ आठ 'अमृत-कलश' हैं. ऐसे अमृत-कलश मन-समुद्र मथन से निकले हैं भाई श्रीचन्द सुराना 'सरस' जो जैनसाहित्य के मर्मज्ञ विद्वान् तथा भारतीय धर्म एव सस्कृति के अध्ययनशील लेखक है, ने बडे श्रम के साथ गणेश मुनिजी, शास्त्री के एक सौ आठ अमृतकणो का सपादन कर सर्वसुलभ बनाया है

'मुनिश्री' जी की कई रचनाएँ मैं पढ चुका हूँ उनकी रचनाएँ ही अब तक हमारे परस्पर परिचय की सेतु रही है प्रत्यक्ष परिचय के अभाव मे भी मैं कह सकता हूँ कि उनके ऐसे भक्त, जो दूर-दूर के रहनेवाले है, जिनको उनका दर्शन नही मिल पाता है, उन्हे ये रचनाएँ अनुप्राणित करती रहेगी मुनिजी महान् श्रमण हैं और परोपकार ही उनके जीवन का लक्ष्य है प्रवचनो के साथ-साथ साहित्यसर्जना करके भी वे मानवजाति का महान् उपकार कर रहे है उनकी रचनाओं से हजारो ज्ञान

पिपासुओ का भला हुआ है बहुतो ने अपना जीवन सँवारा है मुनिश्रीजी की यह रचना भी बहुत ही मूल्यवान है इसके सभी कण एक-से-एक बढकर है. सरसता, सरलता और ग्राह्यता की दृष्टि से बेजोड है पता नही किस 'अमृतकण' से किसका क्या भला होगा ? लेकिन होगा अवश्य, यह मेरा विश्वास है

मोती का स्वरूप लघु होता है, किन्तु उसका मूल्य कितना अधिक होता है सक्षिप्तता ही सच्ची विद्वत्ता है मुनिजी की ये सूक्तियाँ देखने मे छोटी, सीधी-सादी और सरल है परन्तु इनमे अणुशक्ति की सूक्ष्मता है जो वस्तु जितनी सूक्ष्म होती है वह उतनी ही शक्तिशाली और प्रभावशाली होती है. इन गागरो मे सागर भरे है बिहारी 'सतसई' के दोहो की तरह 'देखने मे छोटे लगं, घाव करै गभीर' देखने मे ये छोटी है किन्तु इनका हृदय पर गहरा और अद्‌भुत प्रभाव पडता है

सूक्ष्मता और लघुता के साथ-साथ इनमे असली मोती के समान सादापन और उच्चता भी है. नकली मोती की तरह इनमे नकली चमक नही है कित-ा ठीक कहा गया है कि .—

जो नकली मोती होता है, वह ज्यादा चमका करता है,
जो असली मोती होता है, वह सीधा-सादा होता है.

सभव है, पाठको को इसमे अलकृत भापा और शब्दो का आडवर न मिले, किन्तु निश्छलता, उत्साह तथा विश्वास की लहरे इसमे हिलोरे ले रही हैं, निश्चय ही उनसे भव-मागर मे भटके पथिक को सवल किनारा मिलेगा जीवन सग्राम मे वह वीर सैनिक वनकर विजयी होगा

निर्मल और प्रेरक अमृत-कण की वीथियाँ—आइये इस 'अमृतकण' की वीथियो मे विचरें मन मधुकर द्वारा प्रदान की गई ये वीथियाँ—निराली है इनमे अद्भुत आलोक है

मुनिश्री जैन श्रमण हैं, किन्तु उन्होने 'अमृतकण' को सर्व-सुलभ वनाया है कही भी, किसी भी पृष्ठ को उलटिए मानवता को तरगित करनेवाले—निर्मल और पवित्र अमृतकण मिलेंगे मनुष्यत्व की भाव-गरिमा के दर्शन होंगे, निराशा और कुण्ठा को भष्म करनेवाली अमोघशान्ति आपका स्वागत करेगी एक अमेरिकी विद्वान् ने लिखा है—"हमे जल की निर्मलता और पवित्रता को परखकर अवश्य ही उसका पान करना चाहिए विमल जल के उद्गम स्रोत को ढूँढने की कोई आवश्यकता नही है" ठीक यह कथन इन 'अमृतकणो' के लिए भी चरितार्थ होता है

आत्मा को दीप्त करने वाली अन्तर्दृष्टि—मनुष्य भौतिक पदार्थों की खोज की दिशा मे बहुत आगे है. उसने भूमण्डल का कोना-कोना झाँक लिया है चन्द्रमा की सैर भी कर आया. समुद्रो के अन्तस्तलो को उसने चीरकर रख दिया. विश्व की सर्वश्रेष्ठ पर्वतमाला हिमालय के शिखर पर झण्डा फहरा दिया, परन्तु यह कितनी विडम्बना की बात है कि वह स्वय को न जान पाया, न पहचान पाया और उसने स्वय को जानने की कोशिश भी कहाँ की ? इसीलिए वह सुख की खोज मे दौड रहा है, भाग रहा है, परन्तु वह यह नही जानता कि वो 'अमृत-कण' निज के मन मे ही है. विचित्रता ही विचित्रता है तन, मन और वातावरण मे—घोर अन्धकार लिये मानव आकाश की यात्रा कर रहा है वह दूसरे ग्रह पर दीपक जला रहा है और उसके घर मे घोर अन्धकार है

भगवान महावीर ने कहा था—"पहले स्वय को जानो, दूसरो को समझने के पहले स्वय को समझ लो दूसरो से कहने के पहले, उसके योग्य बनो" महान् साधक **गणेश मुनिजी शास्त्री** इसी ध्येयपथ के पथिक है उन्होने स्वय को जाना है, कठिन तप और साधना की है. इस 'अमृत-कण' मे उनके इन्ही मन की खोजो मे उपलब्ध मोतियो

की माला है इस रचना मे आत्मा को दिप्त करने वाली अन्तर्दृष्टि है

प्रकाश मछली—शीर्षक के अन्तर्गत मुनिश्री इस अन्तर्दृष्टि के सम्बन्ध मे कहते है—"प्रकाश मछली यह नही जान पाती है कि वह स्वय के प्रकाश से आलोकित है. मनुष्य की भी यही दशा है. वह अपने व्यक्तित्व मे कुछ विशिष्ट गुणो का आलोक देखकर स्वय विस्मित हो उठता है, और उनके उद्गम-उद्भव विकास को किसी की विशिष्ट कृपा मानने लगता है वह यह नही जान पाता कि इस मृण्मय देह मे उसी का एक चिन्मयरूप छिपा है, और यह उसी का आलोक है."*

बन्धुत्व का भाव—जैन साधना का पथ अपूर्व-त्याग का पथ है वह बन्धुत्व, भाईचारा और विश्वमैत्री का केवल उपदेश नही देता, उसे साकार करता है समता और समन्वय की सीढियो से चढकर वह आत्मभाव का दर्शन करता है.

"ईश्वर का साकाररूप देखने को तब मिलता है जब किसी मानव आत्मा मे दया, करुणा और स्नेह की उर्मियाँ उछलने लगती हैं कुछ क्षण के लिये ईश्वर उस आत्मा

---

* देखिये इसी ग्रन्थ मे पृ० ६०.

मे साकार हो उठता है और उस दिव्यरूप को हम कह उठते हैं मानवता".*

इस 'अमृत-कण' मे लोक व्यवहार मे आनेवाली समस्त तो नही, किन्तु बहुत सी आवश्यक वातो का यथार्थपरक चित्रण हुआ है जैसे धर्म, अध्यात्म, नीति आदि. कुछ उल्लेखनीय है:—

प्रजा वृक्ष की जड़ है—"प्रजा जड की तरह है और वादशाह वृक्ष की तरह, वृक्ष जड़ से ही मजबूत होता है, "यदि तू प्रजाको दु ख और पीडा देता है तो तू अपनी ही जड कमजोर करता है" आज के युग मे भी राजनेताओ के लिए यह कथन उतना ही सार्थक है.†

'श्रमण संगीत' श्रमण प्रतिक्षण यह सगीत सुनाता रहता है कि—"आत्मा ज्ञान का अक्षय सागर है, वहाँ अनन्त ज्ञानराशि भरी पडी है. वाणी उस ज्ञान मे से एक सरिता की धारा मात्र है. मन समुद्र है, वाणी सरिताप्रवाह है."†*

---

* देखिए इसी ग्रन्थ मे पृ० १०५.

† " " " " पृ० ६१

†* " " " " पृ० ६८

दृढता की कुल्हाड़ी—साहस और दृढता जीवन के मूल्यवान आभूषण है मुनिश्री कहते है—"जब रूढियाँ, अधविश्वास और गलतपरपराएं बेडी बनकर तुम्हारे गतिशील चरणो को रोक रही हो तो तेज कुल्हाड बनकर उन्हे नष्ट कर डालो खण्ड-खण्ड करके उन्हे नष्ट करदो."*

मानव ही ईश्वर है—भारतीय चिन्तनकी समस्त धाराओ मे मनुष्य को ही ईश्वर माना गया है मुनिश्री जी ने इस विराट सत्य का वडा ही भव्य रूप प्रस्तुत किया है "आज के मानव मे कल का ईश्वर सोया है जैसे—आज के बीज मे कल का वृक्ष छुपा है सुप्त ईश्वर—मानव है, जागृत मानव—ईश्वर है"†

पुरुषार्थ—पुरुपार्थहीन जीवन कोई जीवन नही है मुनिश्री पुरुपार्थ के लिए ललकारते हुए कहते हैं—

"भाग्य भी हमारी रक्षा तभी करता है, जब हम स्वय अपनी रक्षा के लिए पुरुपार्थ करते है."†*

---

* इसी ग्रन्थ मे पृ० ५७

† " " " पृ० ७३

†* " " " पृ० ५८

जीवन की सच्ची सफलता—"सच्ची सफलता एकाकी भौतिक उन्नति नही है दान, सेवा और विवेक (समन्वित जीवन) इन तीनो के मिलन से ही जीवन मे सच्ची सफलता प्राप्त होती है"*.

'अमृतकण' मे लौकिक और आध्यात्मिक दोनो ही जीवन की धाराओ को सुमार्गगामी बनाने के लिए पर्याप्त सामग्री है. 'अमृत' अमरत्व की प्राप्ति का साधन माना गया है मेरी दृष्टि मे सच्चा मानव बनना ही अमरत्व है और एक सच्चे मानव के निर्माण के लिए समग्र 'अमृत-घट' इस सग्रह मे है.

मेरा अनुमान है कि सूत्रो से ही सूक्तियो का विकास हुआ होगा. अति प्राचीन काल मे लाखो वर्ष पूर्व जब लेखन कला का विकास नही हुआ था तो साधको, मुनियो एव ऋषियो ने सूत्रो मे ही अपनी बाते कही होगी उनकी मौखिक व्याख्या समझने की प्रथा रही होगी ऐसा इसलिए किया गया होगा कि सूत्रो को सरलतापूर्वक कठस्थ किया जा सकता है लाखो वर्षो तक इस प्रणाली के द्वारा भारतीय ज्ञान एव चितन सुरक्षित रहा है. निगमो और आगमो के ज्ञान सूत्रो मे ही सुने जाते थे इसलिए निगम

---

* इसी ग्रन्थ मे पृ० १०३

—'श्रुति' कहे गए और आगम—'श्रुत'. आगम का अर्थ है—परम्परा से आने वाला.

विश्व के समस्त व्यापारो—(कार्यो एव व्यवहारो) का सचालन कार्य-कारण के आधार पर ही होता है. आवश्यकता से क्रिया का, क्रिया से प्रक्रिया का और प्रक्रिया से प्रतिक्रिया का क्रम चलता है विचारको, मनस्वियो एव सतो की श्रेणी के लोग तटस्थभाव से सृष्टि के इन व्यापारो का निरीक्षण एव सूक्ष्मपरीक्षण करते रहते हैं अनतकाल से यह कार्य-व्यापार चल रहा है. अनतकाल से कार्य-क्रिया की प्रक्रिया और प्रतिक्रिया हो रही है भेद केवल देशकाल का होता है मुनिजी ने 'अमृतकण' मे प्राचीन तथा समकालीन दोनो ही प्रकार की चिंतन क्रियाओ की सफलप्रक्रिया और प्रतिक्रिया प्रस्तुत की हे उन्होने उन्हे युगानुकूल बोधगम्य बनाकर उन पर अपने व्यक्तित्व की अमिट छाप छोड दी है सचमुच इस महान् उपलब्धि के लिए वे बधाई के पात्र है

तप और आराधना मानव-जीवन (आध्यात्म) के दूसरे सोपान है प्रथम सोपान ज्ञान है. शास्त्रो का अध्ययन करके कोई साक्षर भले ही हो जाए, ज्ञानी नही हो सकता कबीर ने इसीलिये तो कहा था कि प्रेम का ढाई अक्षर पढे बिना कोई पडित नही बन सकता इसका

तात्पर्य यह है कि इस अनेकान्त विश्व मे समभाव' का पठन किये बिना कोई पडित नही हो सकता जीवन-व्यापार मे घटने वाली छोटी-छोटी घटनाएँ ही आत्म-बोध कराती हैं, जीवन को बदल देती है और विश्व मे वडी-बडी क्रातियो को जन्म देती है मुनिश्री जी ने दैनिक-जीवन मे घटनेवाली घटनाओ को ही इन सूक्तियो मे समाहित किया है महापुरुषो के कथनो को निरीक्षण और परीक्षण की खराद पर चढाकर ही यह 'अमृतकण' हमे सौपा है मैं श्रद्धापूर्वक उनके श्रीचरणो मे नमन करता हूँ और उनके 'अमृतकण' को सादर पाठको को समर्पित करता हूँ—

तुम्हे सौंपता लो 'अमृतकण',
जग-जनहित भावो से पूरित.
अनेकान्त की महिमा से हो—
धरती का यह जीवन सुरभित.

—डा० बृजबिहारी तिवारी
एम ए ,पी-एच डी. (उसमानिया वि वि)
अध्यक्ष—हिन्दी विभाग
आर. एस. एम. डिग्री कालेज
धामपुर—बिजनौर

अनुक्रम

अपना स्वभाव

सज्जन कष्ट और विपत्ति में भी अपनी सज्जनता नही छोड़ते और दुर्जन ऊँचे पद पर पहुचकर भी अपनी दुष्टता से बाज़ नही आते.

मैने देखा है—हीरा कीचड़ और मिट्टी में गिरकर भी अपनी चमक नही खोता, उसका वही मूल्य होता है. और धूल आकाश में ऊची चढकर भी कष्ट देती है अपना स्वभाव नही छोड़ती. इसीलिए कहा गया है—

जाको पड्यो स्वभाव जासी जीवसूँ
नीम न मीठा थाय सिचो गुड घीवसूँ. ०

अपूर्णता

मैने देखा—एक यात्री पथ पर कभी इधर, कभी उधर भटक रहा है उसे नही मालूम उसकी मजिल किधर है और उसका रास्ता कौन-सा, किधर से जाता है

मैंने देखा—एक पक्षी जिसके सुनहरे पख किसी ने काट डाले है, विचारा तडफडा रहा है

मैंने देखा—एक विशाल वृक्ष पत्तियो और फूलो से लदा खडा है, उस पर एक भी फल नही है

मैंने देखा—एक सुन्दर विशाल भवन राजपथ पर सिर उठाए खडा है, पर उसमे प्रवेश करने का कोई द्वार ही नही वना है

इन चारो की अपूर्णता पर विचार करते-करते मैंने एक विद्वान को देखा. जिसने नीति और धर्म पर लम्बे-चोडे भापण तो दिए, किन्तु उसके जीवन मे कही भी धर्म का दर्शन नही हुआ मैने सोचा—उनकी अपूर्णता सिर्फ उन्हे ही दु खदायी है, लेकिन इस धर्महीन विद्वान की अपूर्णता देश के लिए भी चिंता का विपय है····

असफलता से भी ज्ञान

एडिसन को ५०,००० प्रयोगो के बाद 'स्टोरेज बैटरी' बनाने में सफलता मिली. उनका सहायक उनके असफल प्रयोगों पर आश्चर्य कर रहा था पर एडिसन प्रयोग पर प्रयोग किये जारहे थे. हर असफलता पर वे नया उत्साह संजोकर अगले प्रयोग की तैयारी में जुट जाते.

एकदिन एडिसन के सहायक ने कहा—इतने असफल प्रयोगों से आखिर नतीजा क्या निकला ? एडिसन ने उत्तर दिया—बैटरी तैयार हो जाने के अतिरिक्त मुझे हजारों बाते ऐसी मालूम हो गयी, जिनसे बैटरी नही मिल सकती.

सहायक उनके धैर्य पर चकित था. ० ०

अंतिम दम तक

मोमबत्ती जलाई जाती है, तो बस जलती ही जाती है- जब तक जलकर निःशेष नही हो जाती बुझने का नाम ही नही लेती

निष्ठावान साधक की भी यही स्थिति है, वह मोमबत्ती की तरह जीवन की अतिम सास तक अपने लक्ष्य के लिए जलता ही रहता है जीवन के रणक्षेत्र मे हाथी की तरह अतिम दम तक जूझता ही चला जाता है—
"सगामसीसे जह नागराया." ४

आचरण शून्य

एक किसान ने कड़ी मेहनत से खून-पसीना एक करके अपना खेत तैयार किया. चिल-चिलाती धूप में बैठ कर ढेले फोड़े, मिट्टी को मुलायम वनाया और फिर वर्षा होने पर हल भी चलाया, किन्तु बीज नही डाला.

एक व्यक्ति ने दिन-रात पुस्तकों से माथापच्ची कर ज्ञान प्राप्त किया. दिन में सूर्य के प्रकाश और रात में चांद की चांदनी में बैठ कर सैकडो शास्त्र पढे, हजारों पन्ने पलटे, किन्तु सब कुछ पढ कर भी उसके एक अक्षर पर भी आचरण नही किया.

क्या इन दोनो की मूर्खता में कोई अन्तर है? सोचिए! गहराई के साथ !!

आत्म-निरीक्षण

एक साधक ने आत्म-निरीक्षण की मधुर वेला मे आत्मा का अन्तर-दर्शन करते हुए लिखा है—मैंने अपनी आत्मा को पाच वार धिक्कारा है —

१ जब उसने ऊँचा ओहदा पाने के लिए खुशामदों और कागजी सिफारिशो का आश्रय लिया.

२ जब उससे कहा गया कि सरल और कठिन में से एक को चुनले, तो उसने सरल को चुना.

३ जब उसने पाप किया और यह सोच कर सन्तोष कर लिया कि दूसरे भी तो ऐसा ही करते है.

४ जब उसने व्यक्ति की बाह्य कुरूपता से घृणा की और यह नही जाना कि सबसे अधिक कुरूप तो उसका मन ही है.

५. जव उसने परायी निंदा के ब्याज से अपनी प्रशसा सुनी और यह न समझा कि वह उसीके भीतर का शैतान बोल रहा है.

वास्तव में यह चितन अपने मन की एक स्पष्ट तस्वीर हमारे सामने खीच देता है और अपने कृत्य के प्रति जागरूक बना देता है. ◊

उद्बोधक उक्ति

तेलुगु के एक सत कवि वेमना की उक्ति कितनी उद्बोधक है—

> भूमि नादियन्ना भूमि पक्कुन नव्वु,
> दानहीनु जूचि धनमु नव्वु
> कदन भीतु जूचि कालुडु नव्वुरा,
> विश्वदाभिराम विनुर वेमा.

विश्व को आनन्दित करनेवाले वेमना, सुनो ! यदि कोई आदमी कहता है कि यह भूमि मेरी सम्पत्ति है, तो भूमि (उसकी मूर्खता पर) हसती है. कजूस को देखकर धन (उसके अज्ञान पर कि यह धन यही रह जायेगा मूर्ख क्यो कजूसी कर रहा है) हसता है और रण से डरकर भागनेवाले पर काल (मौत कही भी नही छोडेगी, फिर भाग क्यो रहा है) हसता है

उदारता का अर्थ

जिस वस्तु की तुम्हे आवश्यकता नही, उसे किसी गरीब या जरूरतमन्द को दे देना—यह कोई उदारता नही।

उदारता का अर्थ है—अत्यन्त आवश्यक एवं प्रिय वस्तु को भी दया, स्नेह एव सहयोग की भावना से अर्पित कर देना

उदारता वस्तु से नही, भावना से आकी जाती है.

दया, दान और सेवा वस्तु से नही, परिस्थिति पर भावनापूर्वक करने पर ही अपना सुफल दिखाते है.

उदारता और त्याग

उदारता ने कहा—यदि लोग मुझे अपनाये, तो मागनेवालो को कोई कमी न रहे.

त्याग ने कहा—यदि लोग मुझे अपनाले, तो ससार मे किसी को मांगने की जरूरत ही न हो ००

उपदेश

ईरान के न्यायप्रिय सम्राट फरीदूँ ने अपने महल के दरवाजे पर दो अमूल्य वचन लिखवाये थे—

१ यह दुनिया चार दिन की चांदनी है.

२. मरने के बाद बादशाह और भिखारी में कोई फर्क नही है

वह न्याय के आसन पर बैठने से पहले इन दो वाक्यो को गम्भीरतापूर्वक पढता और फिर मन में अटल न्याय का सकल्प लेता.

क्या ही अच्छा हो, यदि हम भी इन वाक्यों पर विचार कर अपने आचरण को पवित्र व नीतियुक्त रखे !

एक हरफ

किसी दुष्ट व्यक्ति ने एक भक्तहृदय संत से कहा—महाराज ! कुछ सुनाइए !

सत ने कहा—यदि तू सुन सकता है तो एक ही हरफ (अक्षर) तेरे लिए काफी है—

जो काटा वोएगा,
वह फूल कहाँ से पाएगा ? ४

एकांत और शांति

कुछ लोग शांति की खोज में एकांत में, 'पहाड़ो में; निर्जन वनों या नदी तटो पर निवास करते है, पर क्या यह शाति प्राप्त करने का सही मार्ग है ? क्या शाति कही एकात निर्जन वन में छ,ुपी है ? वास्तव में अच्छे विचारो और एकाग्रचिन्तन से जो शांति प्राप्त होती है, वह एकातवास की शांति से हजार गुनी अच्छी है

शांति के लिए एकात वन में नही, किंतु प्रशांत मन में प्रवेश करो। अच्छे विचारो के आश्रम में निवास करो और एकाग्र साधना के सहारे शाति का आनन्द अनुभव करो. ०

कटुक वचन

मधुर वचन स्नेह, सद्भाव एवं आनन्द की हिलोरें पैदा करता है तो कटुकवचन घृणा, द्वेष, विरोध, वैमनस्य की झुलसती लू.

मधुर वचन के शीतल-स्पर्श से हृदय कमल पुलकित हो उठते है, तो कटुकवचन के उष्ण-स्पर्श से मुर्झा जाते है

भगवती सूत्र मे एक जगह प्रसग है, जिससे पता चलता है कि कटुक एव अप्रिय वचन कभी किसी को भी नही कहना चाहिए

गणधर गौतम के प्रश्न के उत्तर मे भगवान ने

वताया—देवता, सयमी तो नही है, संयतासंयती भी नही है

फिर क्या उन्हे असयमी कहा जाए—गौतम ने पूछा

भगवान ने कहा—नही ! उन्हे नो सयमी कहना चाहिए

भन्ते ! ऐसा क्यो ?

गौतम ! असयमी कहना निष्ठुर वचन है "निट्ठुर-वयणमेयं" साधक को ऐसा वचन वोलना चाहिए जिसे सुनकर श्रोता के मन में प्रोति, सद्भाव एव विश्वास उत्पन्न हो

आचार्य धर्मदास ने तो यहा तक कहा है—

"फरुसवयणेण दिण तव"

एकबार कटुक वचन वोलसे ने एक दिन का तप नष्ट हो जाता है.

*भगवती सूत्र २/५/४

कविता का जन्म

कविता का जन्म शब्दो के सागर पर उठती शीतल लहरो से नही, उसके अन्तर की अतल गहराई में मचलते दावानल से हुआ है

शब्द लहरों से किनारे पर आते है—गीतो के शख, स्वरो की सीपिया और गुँजन के घोंघे

किंतु भीतर के दावानल में दमकता है एक तेज ! एक अपूर्व वेग ! वस, वही है कविता का जन्म स्थान ! अतल वेदना से सतप्त मनोभूमि. ०

कानाफूसी

नीतिशास्त्र ने निंदा को जितनी निम्नस्तर की कही है, उतनी ही, बल्कि उससे भी ज्यादा निम्न-स्तर की बताई है—कानाफूसी ! जब व्यक्ति में निंदा करने का भी साहस नहीं रहता तब गुपचुप में कानाफूसी चलती है.

राम जैसे मर्यादापुरुषोत्तम को इसी कानाफूसी ने बहकाया और सीता के प्रति सदेह का जन्म हुआ सीता को वन-वन भटकाने वाली है यही कानाफूसी.

चीन के प्रसिद्ध तत्त्ववेत्ता चिङ्-उ- मिङ् ने एक बार वहां के सम्राट से कहा था—राजन् ! मैं एक ऐसी दुष्ट महिला को जानता हूँ, जो साम्राज्य के साम्राज्य पचा जाती है, उनके भग्नावशेष भी नजर नही आते. तू उसे प्रोत्साहन देना वन्द कर, अन्यथा तेरा यह साम्राज्य भी वात-की-बात में छिन्न-भिन्न हो जाएगा

इसी कानाफूसी के दो रूप जैन आगमो मे आये है एक पृष्ठमास (चुगली) और दूसरी मिथ.कथा दशवैकालिक सूत्र में कहा है—

पिट्ठिमस न खाइज्जा ..

मिहो कहाहिं न रमे....

पीठ पीछे बुराई न करो और परस्पर घुल-मिल कर गुपचुप वाते (कानाफूसी) मे समय वर्वाद न करो स्वस्थजीवन के लिऐ ये दोनो ही जहर के समान है

8

काव्य का चमत्कार

एक महाकवि से किसी ने पूछा—आपने काव्य में इतना चमत्कार कैसे पैदा किया ? आपकी बुद्धि और कल्पना का मैं लोहा मानता हूँ.

महाकवि ने हंस कर कहा—तुम भ्रम में हो. मैंने अपने काव्य मे कही बुद्धि और कल्पना को महत्व ही नही दिया है.

सच मानो, काव्य का चमत्कार बुद्धि से नही, हृदय से निकलता है कल्पना से नही ,श्रद्धा से ही काव्य रस की सृष्टि होती है. महाकाव्य का मूलतत्व बुद्धि और कल्पना नही, शब्द-शिल्प और कथा-वस्तु नही, किंतु वह मूलतत्व है. हृदय की श्रेष्ठ अनुभूति और श्रद्धा सिक्तवाणी. ◊

कितना खान ?

लुकमान हकीम से किसी ने पूछा—स्वस्थ रहने के लिए कितना खाना चाहिए ?

हकीम ने कहा—जितनी भूख हो उससे कम.

भूख न सही जाये तो ?

पेट भर कर खा लो, मगर दूसरे वक्त लघन कर दो

ऐसा भी न कर सके तो . ? फिर पूछा गया

फिर कफन सिरहाने रख कर चाहे जितना खाओ —लुकमान हकीम ने दो टूक उत्तर दिया.

स्वस्थता का पहला साधन है, भूख से कम खाना

कीर्ति-कुंवारी है

कीर्ति-कुमारी ने एक दिन ब्रह्मा जी के समक्ष उपस्थित होकर शिकायत की—प्रभो ! आपने ससार मे हर नारी के योग्य किसी पुरुष की रचना की है और उसे योग्य वर भी मिला है, पर मुझ पर ही आपकी यह अकृपा क्यो ? मुझे अबतक अपने योग्य कोई वर नही मिला.

ब्रह्मा जी चकित होकर कीर्ति की ओर देखने लगे—क्या सच; इस ससार में कोई भी योग्य पुरुष तुम्हें नही मिला ?

कीर्ति—पुरुष तो वहुत है, पर जो वीर है, गुणवान है, विद्वान है वे तो मुझे चाहते नही और कायर, गुणहीन तथा मूर्खो को मैं नहीं चाहती. इस कारण मैं अव तक ही कुँवारी वैठी हूँ.

खजाना

एक संत ने कहा है—खजाना खाली हो जाये तो कोई फिकर मत कर मगर इसकी फिकर कर कि मित्रो और जरूरतमन्दो का दिल तेरी सूरत से खाली न हो. जिसके लिये दुनिया के दिल भरे हैं, उसके खजाने खाली होकर भी भरे रहते हैं ◊

खानेवाले....!

भक्त, हमेशा भूख से आधा खाना खाता है.
सत, उतना खाना खाता है, जिससे जीवन यात्रा का निर्वाह हो सके.

सद्गृहस्थ, उतना खाता है कि वह सुख से सास ले सके और आनन्द से जी सके.

पेटु, इतना खाना खाता है कि खाते-खाते पसीना आने लगता है और पेट में सांस लेने की भी जगह नही रहती. उसे दो रात तक नीद नही आती. पहली रात खाने के वोझ से दबे होने कारण और दूसरी रात भूख की चिंता से...

भगवान महावीर की वाणी में स्थान-स्थान पर एक स्वर बड़ी तीव्रता के साथ मुखरित होता है. समय का महत्व समझो

खण जाणाहि पडिए !—आचारागसूत्र

पडित ! क्षण का महत्व समझो उसका सदुपयोग करो यही बात उन्होने अपने प्रिय शिष्य इन्द्रभूति को सम्बोधित करके पचासो बार दुहराई.

समय गोयम ! मा पमायए !"—उत्तराध्ययन

गौतम ! समय-पल भर को भी व्यर्थ मत गवाओ.

रुस के प्रसिद्ध विचारक टाल्सटाय ने अपनी डायरी मे समय के सम्बन्ध में लिखा है—हम सबके पास एक कल्पवृक्ष है, उसका नाम है - अब ! पलक मारते ही यह कल्पवृक्ष अन्तर्धान हो जाता है. इसीलिए हमारे तत्त्ववेत्ता कहते हैं कि इस 'अब' नामक कल्पवृक्ष को दोनो बाहो मे पकड कर रखो और उसके अमूल्य फलो का आस्वादन करो

क्षमता

प्रात.काल की रमणीयता का दर्शन वही कर सकता है, जिसमे रात्रि का कुरूप अन्धकार देखने की क्षमता है

सुख के मधुमास के शीतल सुरभित पवन का आनन्द वही ले सकता है, जिसमें दु:ख के शिशिर की बर्फीली हवाओ को सहने की क्षमता है

दु:ख को सहन करनेवाला ही सुख का आनन्द ले सकता है.

चापलूसी

चापलूसी एक मीठा जहर है

सुन्दर शब्दो की प्यालियो में भरा हुआ यह हर किसी का मन मुग्ध कर लेता है. लेकिन अपने कानो को सावधान कर दो, इसे अमृत समझकर पीने की भूल न करे. ◊

चापलूसी से बचो

शत्रु के षड्यत्र से बचना सरल है, किंतु चापलूसो के जाल से बचपाना बहुत कठिन.

शिशिरऋतु की कड़ाके की सर्दी से मनुष्य बच सकता है, कितु हेमन्त और वसन्त की मीठी सर्दी से प्राय. बीमारिया फैल जाती है.

डाक्टर कहते है—मीठी सर्दी से बचो !

नीतिज्ञ कहते है—चापलूसी से बचो ! ०

चार स्वभाव

प्रसिद्ध विद्वान 'लॉगफेलो' ने मानव स्वभाव का विश्लेषण कर उसकी चार भूमिकाए बताई है—

१ पाप में पडना—मानव स्वभाव है.
२ पाप मे डूबे रहना—शैतान स्वभाव है
३. पाप पर दु खित होना—सत स्वभाव है.
४ और पाप से मुक्त होना—ईश्वर स्वभाव हैं ०

चिंता की मकड़ी

जीवन के चतुर पारखीशेक्स पियर ने कहा है—
कायर व्यक्ति मौत आने के पहले ही कई बार मर
चुके होते है.

और चिता व भय के इसी दुष्परिणाम पर विचार
व्यक्त करते हुये चीनी विद्वान 'संत लाओत्जे' ने
कहा है—
चिंता खूँखार मकड़े की तरह है, मकड़े के जाल
मे जहां एकबार मक्खी फस गई, वहा फिर
उसका त्राण नही, ज्यो-ज्यो वह बाहर निकलने
की कोशिश करती है, त्यो-त्यो वह खिच कर
मकड़े के गाल में ही चलती जाती है.

चिंता के शिकार मनुष्य की भी यही गति होती है
चिंता से मनुष्य अशांत होता है, अशाति अकर्मण्य
व दिग्मूढ़ बना देती है और फिर तो विनाश ही
विनाश....!

चिता से विपत्ति नहीं टलती

अग्रेज सेनापति फील्ड मार्शल वेव्हल से उनके सैनिक जीवन की सफलता के बारे मे पूछने पर उन्होने वताया—बुरी से बुरी परिस्थितियो में भी मैं किसी चिता को अपने पास फटकने नही देता.

प्रश्नकर्त्ता ने फिर पूछा—मान लीजिये, आप किसी युद्ध मे शत्रु सेना से चारो ओर से घिर गये हो, उस विकट परिस्थिति मे भी क्या आपको चिंता नहीं सतायेगी ?

सेनापति ने अदम्य साहस के साथ कहा—मेरा विश्वास है, चिंता करने से ससार की कोई भी विपत्ति आज तक नही टली है. विपत्तियो पर विजय पाने के लिए साहस की जरुरत है, फिर चिंता किसलिए की जाये...?

जब धर्म नहीं रहेगा....!

आज चारो ओर एक प्रश्न चिन्ह लगा हुआ है —धर्म से क्या लाभ है ? भारतवर्ष धर्म भूमि होते हुए भी यहा पर ईतनी बेइमानी, इतना अत्याचार और इतनी अशाति फैली है, तो इस धर्म से लाभ क्या है ?

इस प्रश्न के दूसरे पहलू को ओझल करनेवाले प्रश्न कर्त्ताओ को समाधान देगा गाधी जी का यह गहराई को स्पर्श करनेवाला उत्तर—

एक बार एक नास्तिक महात्मा गाधी के पास पहुचा. थोडी देर की बातचीत के पश्चात उसने कहा—दुनिया में आज जितनी अशाति और खून-खराबी मची हुई है उससे प्रमाणित होता है कि धर्म बेकार की चीज है, दर असल धर्म अपने मकसद मे कामयाब नही हुआ, तो फिर उससे क्या लाभ ?

शायद तुम ठीक कहते हो—महात्मा गाधी ने शाति के साथ जबाब दिया—पर जरा सोचो तो, अगर धर्म के रहने पर भी लोग जब इतनी अशाति और खून-खराबी मचाये हुए है तो वे धर्म के न रहने पर क्या नही कर गुजरेगे ? ४

झूठ

किसी ने पूछा—झूठ कितनी प्रकार की है?

उत्तर मिला—तीन प्रकार की!

झूठ—जिसे साधारण आदमी बोलते हैं

सफेद झूठ—जिसे पढ़े-लिखे लोग या साहित्यकार बोलते हैं.

आंकड़ेवार झूठ—जिसे राजनेता, वकील और पत्रकार बोलते हैं.

पहली, झूठ मानी जाती है, दूसरी, सत्य और तीसरी सच्ची हकीकत, जो रिपोर्ट और विश्वस्त जानकारी के नाम से चलती है

झूठ का भी ईलाज

कर्म पुद्गल जड है, आत्मा चेतन है कर्म आत्मा को प्रभावित करते है और अपने विषय के अनुसार उसकी दशा वदल देते है. लोग प्रश्न करते है— जड़ पुद्गल चेतन आत्मा को कैमे- प्रभावित कर सकता है ? प्राचीन आचार्यो ने इस के समाधान में 'मद्य' का उदाहरण दिया है. मद्य पीने पर जिस प्रकार मनुष्य मूढ वन जाता है और अण्ट-सण्ट वकने लगता है उसीप्रकार कर्म-प्रभाव से आत्मा मोह-मूढ हो जाता है

आधुनिक विज्ञान ने इसी सिद्धात के आधार पर कि, भौतिक पदार्थ आत्मा की वृत्तियो को प्रभावित करते हैं, एक नया आविष्कार किया है. अमेरिका के अपराध तत्त्व-वेत्ताओ ने एक ऐसी औषध का पता लगाया है जिसे इजेक्शन द्वारा मनुष्य के शरीर में पहुचाने पर उसकी झूठ बोलने की इच्छा-शक्ति नष्ट हो जाती है और वह आप से-आप सच-सच बाते वताने लगता है * ००

*नवनीत, जनवरी १९५३ पृ ५४

डेढ़ पैसे की सिद्धि

जो व्यक्ति कठोर साधना और तपस्या करके उससे भौतिकसिद्धि या लोक-प्रसिद्धि पाना चाहते है, वे वास्तव मे वैसे ही मूर्ख है जैसे कोई चितामणिरत्न को वेचकर काच के टुकड़े खरीदना चाहे—
"चितारत्नमपास्य काचशकल स्वीकुर्वते ते जडाः."

रामकृष्ण परमहस ने एक जगह लिखा है—
एक योगी अपने गुरु के पास गया और वडे गर्व के साथ कहने लगा—मैंने चौदह वर्ष जगल में रह कर योगाभ्यास किया, फलस्वरूप मैंने पानी के उपर चलने की देवीशक्ति प्राप्त की है. मेरी साधना सफल हुई.
गुरु ने वड़े ही सहजभाव से उत्तर दिया—तुमने क्यो चौदह वर्ष तक व्यर्थ ही कष्ट उठाया ? यह सिद्धि तो सिर्फ डेढ पैसे की है कोई भी माझी तुम्हे डेढ पैसा लेकर उस पार पहुचा सकता है अच्छा होता, कुछ प्रभु-भजन करते ✧

तीन दुर्लभ है

सत्य को समझने वाला,

सत्य को प्रकट करनेवाला,

और सत्य को सुननेवाला

तीनो ही ससार में महान है, दुर्लभ है. ०

तीन-रूप

महान नीतिकार विदुर ने एक जगह कहा है—
जिसने ससार मे जन्म लेकर यश कीर्ति-फैलाने का कोई कार्य नही किया, वह जीवित भी मृतक तुल्य है.

जिसने विद्या प्राप्त नही की, वह आखवाला होकर भी अधे के समान है.

जिसने शक्ति प्राप्त करके किसी की भलाई नही की, वह पुरुष होकर भी पुरुषत्वहीन है ◊

तीन संयम

एक दिन बादशाह हुमायूँ ने प्रसिद्ध आलम (विद्वान) बैरामखाँ को चितनलीन देखकर पूछा—बैरामखाँ ! आज क्या सोच रहे हो ?

बैरामखाँ ने कहा—जहापनाह ! मैंने अपने बुजुर्गों से सुना है कि, मनुष्य को तीन अवसरो पर तीन चीजो का सयम रखना चाहिए बादशाह के सामने आँखो का सयम रखना चाहिए, अर्थात् विनम्र रहना चाहिए, फकीरो के सामने अपने मन पर सयम रखना चाहिए और विद्वानो के सामने वाणी पर सयम करना चाहिए

बैरामखाँ की अनुभवपूर्ण बाते सुनकर बादशाह बहुत प्रसन्न हुआ

दान की महिमा से शास्त्रो के पृष्ठ रंगे हुए है. दान-दाता महानपुण्य का भागी होता है, पर कब ? जब उसके मन में दान का अहकार न हो और दान ग्रहण करनेवाला परोपकार के लिए उसे लेता हो

अहकार और यश की भावना से देना और स्वार्थ-पोषण की भावना से लेना, दोनो का ही दान निरर्थक है

किसी ने पूछा—दान लेना उचित हैं या नही ?

उत्तर दिया—यदि किसी सत्कार्य के लिए दान लिया जाता है, तो वह दान अमृत तुल्य है, अन्यथा विष स्वार्थवश लिया गया दान लेनेवाले को डुबो देता है.

दार्शनिक की परिभाषा

दर्शन—केवल बौद्धिक व्यायाम नही, वह तो जीवन की व्याख्या है, जीवन के सिद्धान्तो का विवेचन है जो दर्शन केवल बौद्धिक उलझने खडी करके उन्हे सुलझाने मे ही लगा रहकर जीवन के मूल प्रश्नो से बेखबर रहता है, उसपर व्यग्य करते हुए एक विदेशी विचारक ने दार्शनिक की परिभाषा लिखी है—

वह अन्धा आदमी, अन्धेरे-घुप् कमरे मे उस काली बिल्ली को खोजने का प्रयत्न करता है, जो वहा है ही नही

सिर्फ बौद्धिक लडाई लडनेवाले दार्शनिको पर यह एक करारा व्यग्य है

दास और स्वामी

फ्रांस के विद्वान वाल्तेयर की एक प्रसिद्ध उक्ति है—
भाग्यवान वह है, जिनका धन गुलाम है और
अभागा वह है, जो धन का गुलाम है
यही बात एक प्रसिद्ध सस्कृत श्लोक मे कही गई
है—

आशाया· ये दासास्ते दासा: सर्वलोकस्य.
आशा दासी येषा, तेषा दासायते लोक: .

जो आशा के दास है, वे सव दुनियां के दास है
आशा जिनकी दासी है, सव ससार उनका दास
है.

द्विज की परिभाषा

सस्कृत मे ब्राह्मण को 'द्विज' कहा गया है, और पक्षी को भी

पक्षी एक वार अण्डे के रूप मे जन्म लेता है और दूसरी वार अण्डा फोडकर वाहर आता है अनन्त गगन की असीम उडान भरने मे सक्षम होकर पख फडफडाता है

ब्राह्मण एक वार मानव तन के रूप मे जन्म लेता है, दूसरी वार मानवीय सस्कार प्राप्त करता है, इसलिए सस्कार के रूप मे वह पुनर्जन्म होता है—

'सस्काराद् द्विज उच्यते'

वास्तव मे मानवीय सस्कारो से युक्त प्रत्येक मानव 'द्विज - या - द्विजन्मा' होता है एक मानव तन का जन्म ! दूसरा मानव मन का जन्म ! मानव तन धारण करने मात्र से मानव, मानव नही हो सकता, जव उसमे मानव का मन 'मानव-आत्मा' जागृत होती है, तभी वह मानव कहलाता है ०

द्विज और अज

जब मानव आत्मा को पहचान कर आत्म-रूप में अवतरित होता है तो वह 'द्विज' कहलाता है और जब आत्मा 'शरीर' को भिन्न समझकर उस का मोह छोड 'स्व' में प्रतिष्ठित हो जाता है तो वह 'अज' (अजन्मा) गति को प्राप्त कर लेता है. ०

दिल की आग

यह सही है कि ससार तलवार की धार से नष्ट होता रहा है, मगर उतना नही, जितना एक दु खी और गरीव की आह से

शादी ने कहा है—जगल की आग से जगल ही वर्वाद होते है, मगर एक दु खी के दिल की आग से वडे-वड़े साम्राज्य भी जलकर राख हो गये ८

दुख-सुख

दुख और सुख वैसे ही जुडे हुए हैं, जैसे दिन और रात प्रकाश और अन्धकार. दुख का अन्तिम छोर सुख है और सुख का अतिम छोर ही दुख रूप प्रतीत होता है.

प्रसिद्ध दार्शनिक स्पिनोजा का कथन है—दुख वस्तुत सुख का ही तीव्र दश है सुख की गागर जब रीती हो जाती है तो हमारे प्राण उसे भरते है, यह हमे अखरता है और हम पीडा तथा अभाव का अनुभव करने लगते है

दुख जीवन मे प्रेरणा तथा जागृति लाता है, सुख आलस्य और मूर्छा से ग्रस्त कर लेता है सुख मे सुस्ती आती है, दुख मे चुस्ती

ईसा ने कहा है—दु.ख भगवान का आशीर्वाद है सत तुकाराम ने कहा है—प्रभो ! मै दुख से मुक्त होना नही चाहता हूँ दु ख ही तो तुम्हारी स्मृति का अवसर प्रदान करता है दुख की धारा अहकार को काट देती है

सत्य यह है कि मनुष्य सुख को यदि संयत भाव से भोगे तो उसे दुख की पीडा त्रासदायिनी न हो सुख मे दुख को भूलना ही दुख को बुलावा देना है ◊

दुख का कारण

दुख के अनेक कारणो में से एक प्रमुख कारण है,
—अनिष्ट और आपत्ति की आशंका ।

वहुत वार मनुष्य सर्वथा सुखोपभोग करता हुआ भी भविष्य की दुष्कल्पनाओ से भीतर ही भीतर सिहरता रहता है.

दुख की अनुभूति

कहते है एक वार मिस्र में अकाल पडा वहा के खलीफा हजरत युसूफसिद्दीक ने जनता की बहुत सेवा की वे स्वय भी एक समय खाते और वह भी आधा भोजन लोगो ने उनसे कहा—हजरत ! अपने यहा तो अनाज की कोई कमी नही है. भण्डार भरे पडे है, आप भूखे क्यो रहते है ?

इसलिए कि देश के भूख से छटपटाते लाखो लोगो की याद मुझे वनी रहे और यह पता चले कि भूखो पर कैसी गुजरती होगी—हजरत ने उत्तर दिया.

वास्तव मे दूसरे की पीडा की अनुभूति वही कर सकता है जो स्वय उस स्थिति का अनुभव कर रहा हो प्रति-दिन मिष्टान्न खानेवाले को भूखो की पीडा का क्या पता ? और बगलो मे डनलप के गद्दो पर सोनेवाले को क्या पता फुटपाथ पर रात गुजारनेवाले की तकलीफ का ? ०

दुख-सुख में श्रेष्ठ कौन ?

एक बुद्धिमान से किसी ने पूछा— सुख अच्छा है या दुख ?

बुद्धिमान ने उत्तर दिया—दुख अच्छा है: अगर दुख न होता तो हम सुख को समझते भी नही. प्यास न लगती तो हमें पानी का कोई महत्व नही मालूम होता. यदि रात न होती तो हमें दिन के उज्ज्वल प्रकाश की प्रतीक्षा नही रहती इसी प्रकार दुख ने ही सुख का महत्व बढाया है दुख अपने अन्त में सुख छोड़कर जाता है, किंतु सुख हमें बेमान करके अन्त में दुख से बाध जाता है ०

दुराचारी ..!

दुराचारी विद्वान् और दुराचारी मूर्ख—इन दोनों मे अधिक निकृष्ट कौन है? एक विद्वान से पूछा गया.

विद्वान ने उत्तर दिया—मूर्ख तो एक अन्धे आदमी की तरह है, जो चलता-चलता खड्डे मे गिर जाता है, उसे रास्ता ही नही मालूम, इसलिये वह दया का पात्र है

किन्तु विद्वान दो आंखवाला होकर रास्ता देखता हुआ भी कुँए मे गिर पड़ता है इसलिये मूर्ख दुराचारी से भी विद्वान दुराचारी अधिक निकृष्ट और निन्दनीय है

सृष्टि की प्रत्येक वस्तु गुण-दोष से युक्त है. यदि किसी के पास गुण-दृष्टि है, तो वह अवगुण के ढेर में से भी गुण की छोटी सी कणी चुन लेगा, यदि दोष-दृष्टि है तो गुणो की अपारराशि में से भी कही तिलभर दोष को खोज लेगा.

एक ही वस्तु मे गुणज्ञ गुण देखकर प्रसन्न होता है, दोषज्ञ दोष देखकर क्रोध से तिलमिला उठता है. गुलाव के सुन्दर फूलो को देखकर क्षोभ से उद्वेलित हुआ एक व्यक्ति बोला—अफसोस! इन सुन्दर सुकोमल फूलो में ये तीखे कांटे !

तभी उन फूलों की रमणीयता पर मुग्ध हुआ उसका मित्र पुकार उठा—अहा! प्रकृति का यह रम्य उपहार! क्या चमत्कार है! इन तीखे काटो के वीच में भी इतने सुन्दर फूल खिले है !

जीवन में भी इसीप्रकार की दो दृष्टिया है यह जगत सचमुच दृष्टि का ही एक खेल है.

देह-भाव

मदिर में बैठा पुजारी मदिर के स्वर्णशिखर की भव्यता का दर्शन कैसे कर सकेगा?

देह भावना में बन्द ससारी मानव देह की श्रेष्ठता के शिखर का अनुभव कैसे कर सकेगा?

शिखर को देखने के लिये मदिर से वाहर निकलना होगा

अपनी श्रेष्ठता का अनुभव करने के लिये देहभाव से मुक्त होना पड़ेगा

◊

दो मूर्ख

शेखसादी से किसी ने पूछा—मूर्ख कौन?

वे दो आदमी—सादी ने उत्तार देते हुये कहा—एक वह, जिसने वहुत सा धन कमाया मगर उसका उपभोग नही किया, और दूसरा वह, जिसने वहुत सी विद्याएं पढी, किन्तु उन पर आचरण नही किया.

एक अन्धा आदमी हाथ में लालटेन लिये जा रहा था, रास्ते में उसकी भेट नगर के प्रसिद्ध कंजूस धनी से होगई परिचय के वाद कंजूस धनी ने पूछा —तुम अन्धे हो, फिर लालटेन किसलिये ले रखी है ?

अंधे ने कहा—जिसलिये तुमने धन जमा कर रखा है.... अर्थात् अन्धे की लालटेन दूसरो के लिये है कंजूस का धन भी दूसरो के लिये है.

धन का आकर्षण

धन जड है, जड का आकर्षण जड (मूर्ख) को ही खीच सकता है जो चैतन्य है, ज्ञानवान है, वह जड के आकर्षण, प्रलोभन में कैसे फसेगा ?

विश्वप्रसिद्ध वैज्ञानिक आईंस्टीन से एक समाचार पत्र के सम्पादक ने एक लेख की माग की और साथ ही वहुत वड़ी धनराशि पारिश्रमिक के रूप मे देने का उल्लेख भी किया ?

पत्र पा कर आईस्टीन को वहुत दु ख हुआ उन्होंने अपनी पत्नी के सामने इसकी चर्चा करते हुए कहा—इस प्रकार के प्रलोभनो से तो अभिनेत्रियो को आकर्षित किया जाता है, क्या यह मूर्ख मुझे भी उन्ही के समान समझता है ? ○

धन साधनहै !

धन जब जीवन में साधनरूप रहता है तो वह भारवाही गाडी में लगे रबर के चक्के की तरह यात्रा को सरल और सुविधापूर्ण वना देता है.

किंतु जब वही धन, साध्य बन जाता है, तो गाड़ी पर लदे भारी सामान की तरह यात्रा को कठिन और कष्टप्रद बना देता है.

धन जीवन की गाड़ी का चक्का रहना चाहिए, लदा हुआ भार नही.

◊◊

धर्म

सूरज सब को प्रकाश देता है, किंतु जो अधाकर में बैठे रहने का आग्रह किये हुए है, उसके लिये सूरज क्या कर सकता है ?

जल का कार्य है, प्यास बुझाना पर, जो जल के स्पर्श से दूर रह कर प्यास-प्यास पुकारे तो जल उसका क्या कर सकेगा ?

अग्नि का काम है ताप देना, पर जो उससे कोसो दूर बैठा सर्दी से ठिठुरता रहे तो उस कमनसीव को अग्नि कैसे ताप पहुचायेगी ?

इसीप्रकार धर्म का काम है, आत्मा को शाति प्रदान करना, पर जो धर्म के नाम से घवराकर उससे दूर भागता रहता है, धर्म उस दुर्भागी को शाति कैसे प्रदान करेगा ?

पत्थर और कुल्हाड़

आर्चाय अश्वलायन का एक वाक्य है—
'अश्मा भव'—पत्थर वनो !

जव अन्याय, अत्याचार और भय, शंका तथा अविश्वास के तूफान मचल-मचल कर तुम्हे डग-मगाना चाहते हो, तो तुम तन कर खड़े हो जाओ ! पर्वत की चट्टान की तरह !

'परशुर्भव'—कुल्हाड़ वनो !

जव रूढिया, अधविश्वास और गलत परम्पराए बेडी वनकर तुम्हारे गतिशील चरणो को रोक रहे हो, तो तेज कुल्हाड़ा बनकर उन्हें काट डालो. खण्ड-खण्ड कर के नष्ट-भ्रष्ट कर डालो

आर्चाय का सूत्र है—

"अश्मा भव । परशुर्भव ।"

—आश्वलायन गृह्यसूत्र १'१५/३ ◊

पुरुषार्थ

तामिल में राष्ट्रीयता की प्रचण्डधारा प्रवाहित करनेवाले महाकवि सुब्रमण्यम् की एक कविता का हिन्दी भाव पढते-पढते मन में विचार तरगे उठी—"भाग्य भी हमारी रक्षा तभी करता है, जब हम स्वय अपनी रक्षा के लिए पुरुषार्थ करते है. गर्जन-तर्जन कर उफनते हुए तूफानी सागर के किनारे बैठकर हम अपने को भाग्य के भरोसे छोड दे तो भाग्य हमें बेशक विकराल समुद्र के उदर में पहुचा देगा, यदि हम पुरुषार्थ कर उससे बचने के लिये उद्यत होते है, तो वही भाग्य हमें रक्षा के उपाय ही नही सुझायेगा, किंतु सुरक्षित मार्ग भी दिखा देगा...।"

पेट और आत्मा

पेट ने आत्मा से कहा—तुम मेरी मांगे पूरी करो,
मैं तुम्हारे काम आऊगा

आत्मा ने कहा—तुम जव तक मेरे काम के हो,
तभी तक तुम्हारी मागे पूरी करू गी. ◊

प्रकाशमछली

समुद्रो में एक ऐसी मछली पाई जाती है, जो जब तक जल मे पडी रहती है, तब तक तो सामान्य स्थिति रहती है, पर जैसे ही चलती है, तो जल में उसके चारो ओर एक आलोक फैल जाता है वैज्ञानिको ने उसे 'प्रकाशमछली' नाम दिया है अपने चारो ओर आलोक फैला देख कर मछली स्वय यह खोजने लगती है कि वह प्रकाश कहा से, कैसे आ रहा है वह यह नही जान पाती कि यह तो उसीका गुण है

लगभग यही दशा मानव की है वह अपने व्यक्तित्त्व मे कुछ विशिष्टगुणो का आलोक देख कर स्वयं विस्मित हो उठता है, और उनके उद्‌गम-उद्‌भव, विकास को किसी की विशिष्ट कृपा मान लेता है वह यह नही जान पाता कि इस मृण्मय देह में उसी का एक चिन्मय रूप छिपा है और यह उसी का आलोक है.

प्रजा जड़ है

राज्यशक्ति का समस्त केन्द्र प्रजा है चाहे एकतत्र हो या लोकतत्र

जिसप्रकार वृक्ष अपनी जड़ से रस ग्रहण करता है, उसी के आधार पर विस्तार पाता है उसी की दृढता पर अपना अस्तित्त्व स्थिर रखता है. उसी प्रकार तत्र (शासन) भी जनता (प्रजा) के आधार पर ही विकास, विस्तार तथा स्थायित्व पाता है.

ईरान के न्यायी सम्राट नोशेरवाँ ने मरते समय अपने पुत्र हुरमुज से कहा था—प्रजा जड की तरह है और वादशाह वृक्ष की तरह वृक्ष जड़ से ही मजवूत होता है यदि तू प्रजा को दु:ख तथा पीड़ा देता है तो तू अपनी ही जड कमजोर करता है आज के प्रजातत्र युग में भी वादशाह नौशेरवा का यह कथन अक्षरश. सत्य अनुभव किया जा रहा है

प्रतीक्षा

प्रतीक्षा ही सुख के शिखर पर पहुचाने की सुखद सोपान है.

दुख की घडियो को, सुख के स्वप्नो पर तैर कर पार करते रहो.

पतझड में सूखे वृक्ष की नगी टहनियो पर उदास बैठी कोकिल से कवि ने कहा—

तावत् कोकिल ! विरसान्
यापय दिवसान् वनान्तरे निवसन् ।
यावन् मिलदलिमाल.
कोऽपि रसाल समुल्लसति ।।

—पडितराज जगन्नाथ (भामिनी विलास)

कोकिल ! तव तक इन नीरस घडियो को किसी भी तरह वृक्ष की सूखी टहनियो पर ही इधर-उधर घूमते विता ! जव तक कि भौरो की मधुर गुँजार से गुँजित कोई सरस आम्र वृक्ष उपवन में वौराता नही है

प्रेम

प्रेम एक अखण्ड संपूर्ण सृष्टि है.
प्रेम मे कोई मर्यादा और अमुक दिशा का प्रवाह नही होता, वह तो सागर की तरह मर्यादा-मुक्त और सर्वदिश होता है

प्रेम में लघु और विराट्, स्व और पर, ग्रहण और अर्पण का प्रश्न ही नही खड़ा होता.

प्रेम कब, क्यो, किसे और कितना—ये प्रश्न प्रेम की सहज विमल सृष्टि में कालुष्य की रेखाए अंकित कर देते है.

वास्तव में जहां असीम, अनन्त, अहर्निश प्रेमधारा का सतत प्रवाह चल रहा है, वही है प्रेम का सच्चा उद्गमस्थान. वही है प्रेम का सच्चा स्वरूप.

प्रेम और काम

प्रेम तत्त्व के मूल मे जब काम-तत्त्व रहता है तो प्रेम जल की तरह तरल तथा आधी की भाति उच्छृङ्खल होता है उसमें यौन आकर्षण तथा अतृप्त पिपासा रहती है

किंतु जब प्रेम काम-शून्य होकर विराट् मानवीय भावना से उद्‌बुद्ध होता है, तो वही फौलाद की तरह ठोस और गगा के समतल प्रवाह की भाति शात और गभीर हो जाता है उसमे अपूर्व तृप्ति और शांति की तरगे यो उठती रहती है—जैसे शात सरोवर प्रातः काल की हिलोरो से धीमे-धीमे आलोडित होता रहता है

इसी दृष्टि से प्रेम-प्रवाह के तीन रूप बताये गये है—

पत्नी व सन्तान से माता की ओर,
माता से मानवता की ओर,
मानवता से ईश्वरत्व की ओर ♢

बड़ा आदमी

मनुष्य धन से वड़ा नही होता, गुण से बड़ा होता है. अरबपति राकफेलर और कारनेगी को ससार में वह प्रतिष्ठा नही मिली जो लगोटीधारी गाधी को मिली.

क्यो कि, गाधी अपने चरित्र से, गुणो से बड़े बने थे, और धनपति केवल धन के कारण

वड़ा आदमी कौन ?—आद्रे जीद से किसी ने पूछा गम्भीर हो आद्रे जीद ने उत्तर दिया—जिसे आप चाहे नजदीक से देखे, या दूर से जिसे हसता हुआ देखे, या गम्भीरविचार मुद्रा में, जिसे गरीब के साथ देखे या सम्राट या धनपति के साथ जो हर समय अपने वड़प्पन में रहता है, और जो उसके पास आता है उसे भी वड़प्पन देता है. वही बड़ा आदमी है.

वड़े आदमी की कितनी सुन्दर परिभाषा है यह. ०

बलवान

भगवान महावीर ने कहा है—

जो स्वय पर अनुशासन कर सकता है, वही अपने आपको स्वतत्र रख सकता है.

"वर मे अप्पादतो सजमेण तवेण य"

—अच्छा हो, मै स्वय ही सयम एव तप से अपने पर सयम रखूँ, ताकि कोई दूसरा मुझ पर अनुशासन नही करे

इसीभाव को नवभारत के स्वप्नद्रष्टा श्री जवाहर लाल नेहरू ने यो व्यक्त किया है—

"—बलवान मे ही स्वतन्त्र रहने की योग्यता है निर्बल की स्वतत्रता तो मानो पागल के हाथ मे डायनामाइट की छडी है" ०

भय-प्रतिभय

जो संपत्ति किसी को लूटकर प्राप्त की जाती है, उसके लूट लिये जाने का भय भी प्रतिक्षण बना रहता है.

जो सम्मान किसी को नीचा दिखाकर या हराकर प्राप्त किया जाता है उसे स्वयं नीचा देखने या हारने का भय पद-पद पर बना रहता है. ◊

मन और वाणी

मन (आत्मा) ज्ञान का अक्षय सागर है, वहाँ अनन्त ज्ञान-राशि भरी पडी है.

वाणी उस ज्ञान सागर में से एक सरिता की धारा मात्र है

सागर का समस्त जल जिसप्रकार सरिता में प्रवाहित नही हो सकता, उसी प्रकार आत्मा का अनन्त ज्ञान (अनुभव) वाणी द्वारा कभी अभिव्यक्त नही हो सकता

"मनो वै सरस्वान्, वाक् सरस्वती"

—केन उपनिषद् पर शाकर भाष्य का टिप्पण

मन समुद्र है, वाणी सरिता का प्रवाह !

मन की विडम्बना

एक बादशाह ने अपने शाहजादो को राज्य के लिए परस्पर लड़ते-झगड़ते देखकर खिन्न होकर कहा—

"एक कम्बल पर दस फकीर सो सकते है, मगर एक राज्य में दो बादशाह नही रह सकते."

"एक फकीर के पास यदि एक रोटी है, तो वह आधी रोटी खुदखाकर आधी किसी भूखेको खिलाकर प्रसन्न होगा, मगर किसी बादशाह के हाथ में एक साम्राज्य है, तो वह दूसरा साम्राज्य हथियाने के लिए बेचैन रहता है".

सचमुच मानव-मन की यही विडम्बना है गरीव थोड़े में प्रसन्न हो जाता है, किन्तु धनवान अधिक धन पाकर भी बैचेन बना रहता है

मनुष्य का मस्तिष्क

मनुष्य के मस्तिष्क को 'हिरण्यमयकोष' कहा है वह शक्ति का अपूर्वस्रोत है जैनसूत्रो मे बताया है—मन, जिन विचार-तरगो से स्फुरित होता है उन तरगो को सचालित करते है—मनोवर्गणा के पुद्गल वे पुद्गल असख्य योजन लोक को पल भर

अपूर्व शक्ति की एक झलक मिलती है. और, देखिए वैज्ञानिको की भाषा मे मस्तिष्क—जोकि मन का एक व्यक्त रूप है, उसी शक्ति का अनुमान.

विज्ञान का कथन है कि मस्तिष्क में एक वर्ष मे लगभग ७८,०८,२०५ विभिन्न विचार-तरगे उठती है. एक वैज्ञानिक का अनुमान है कि शेक्सपियर के मस्तिष्क की जितनी शक्ति नाटको को लिखने में खर्च हुई, उस शक्ति को यदि एकत्रित किया जाता तो उससे एक भारी डीलडोल का भारवाही विमान तैयार हो जाता, जो इगलैड से अमेरिका जाकर वहाँ के पूरे विस्तार की परिक्रमा करके प्रशात महासागर को पार करता हुआ बहुत दूर जाकर किसी मनोरम वन-भूमि में विश्राम करता * ❖

—फेक्ट्स आव साइंस

---

* नवनीत जुलाई १९५३ पृष्ठ ७३

मनोनिग्रह

मन पर नियत्रण करना, मनुष्य की सबसे बडी विजय है आचार्य शकर ने कहा है—

"जित जगत्केन ? मनो हि येन"

जग को किसने जीता ?

जिसने मन को जीत लिया

यह जगत् मनोमय है, "मनोमय जगत्"—मन से ही सृष्टि का निर्माण होता है—अत जो मन को जीत लेता है, वह विश्व को भी जीत लेता है

महर्षि रमण ने एक जगह लिखा है—"मन ही ईश्वरत्व एव मनुष्यत्व के वीच व्यवधान है मन पर नियत्रण करने से यह व्यवधान हट जाता है और मन ईश्वर-स्वरूप वन जाता है"

जीवन के

विश्व के समस्त वाङ्मय में दो शब्दो का सबसे अधिक बार, सबसे अधिक प्रभावशाली शक्तियो के रूप में उल्लेख हुआ है—वे शब्द है 'मानव, और 'ईश्वर'

आज के मानव में कल का ईश्वर सोया है—जैसे आज के बीज मे कल का वृक्ष छुपा है

सुप्त ईश्वर - मानव है, जागृत मानव - ईश्वर है.

खलील जिब्रान के शब्दो मे—"जीवन वृक्ष का मूल है मानव और उस वृक्ष के शीर्ष पर महकता हुआ रमणीय पुष्प है—ईश्वर ! ईश्वर-शून्य मानव नही, और मानव के विना ईश्वर का अस्तित्त्व नही. मानव का महान् सत्य स्वप्न है—ईश्वर ! और ईश्वर की एक पल की निद्रा है—मानव"

मानव शरीर की महत्ता

मानव शरीर भगवान का मन्दिर है—

"देहो देवालयः प्रोक्त"

—यह देह, वास्तव मे ही देवालय है, इसके भीतर चिन्मय ज्योति स्वरूप आत्मदेव निवास करता है.

उपनिषदो मे शरीर को ब्रह्मपुरी कहा गया है. निरुक्तकार ने पुरुष को परिभाषा करते हुए कहा है—

'पुरिशेते-पुरुष' —ब्रह्मपुरी में शयन—निवास करने के कारण ही इसे पुरुष कहा गया है

मानव तन का ही इतना महत्व है, तो आत्मा का कितना महत्व होगा ? क्या मनुष्य ने सचमुच इसे पहचाना है ? ४

मानव-शरीर का भौतिक रूप

वैज्ञानिकों का कथन है—प्रत्येक मनुष्य के सिर पर औसतन ९० हजार से लेकर १ लाख ४० हजार की सख्या तक वाल होते है मस्तिष्क एवं पीठ की रीढ में जो शिराएँ हैं, उनकी सख्या है १४० अरब. और ३० लाख पसीने को ग्रथियाँ है, जिनमें २ लाख से अधिक तो पैरो के तलवे में ही है *

जिस तन का भौतिक कारखाना ही इतना विराट् है, उसके स्वामी के अभौतिक स्वरूप की कल्पना तो करिए! अनन्त असीम शक्ति का पुंज होगा वह !

*अमरीकी पत्र 'व्हाई' से

मिट्टी की सीख

एक तत्व ज्ञानी से किसी ने पूछा—"जीवन में कैसे जीएँ कि दु.ख और चिंताएँ नही सताएँ"

तत्त्वज्ञानी ने हाथ में एक मिट्टी का ढेला उठाया उस पर पानी की कुछ बूँदे डाली, वह उसमे समा गई, तव उसने कहा—'देख! मानव का शरीर मिट्टी से बना है, तो मिट्टी की तरह ही सुख-दुख को अपने भीतर समा लेना चाहिए जो इन्हे भीतर पचा नही सकता, उसका सव कुछ मिट्टी (व्यर्थ) हो जाता है.'

मितव्ययिता

कंजूसी दोष है, किन्तु किफायतसारी गुण है मनुष्य को कंजूस नहीं, किन्तु किफायतसार अवश्य होना चाहिए. उदाहरणस्वरूप विजली खर्च के डर से अंधकार में रहना कजूसी है और आवश्यक प्रकाश रखकर व्यर्थ के बिजली खर्च से वचना किफायत-सारी—मितव्ययिता है.

एक धनी व्यक्तिसे एक युवक ने पूछा—कि वह किस प्रकार इतना सम्पन्न बन गया ?

'यह एक लम्बी कहानी है'—धनिक ने जँभाई लेकर कहा

'वतलाइए न ?' युवक ने आग्रह किया.

सुनाते हुए काफी समय लगेगा. अगर हम वत्ती बुझाकर शाति से बैठे तो ज्यादा अच्छा रहेगा, सुनना तो कान से है ..। धनिक ने कहा, और वत्ती बुझादी

युवक तत्काल वोल उठा—'बस, अव आपको अपनी कहानी सुनाने की आवश्यकता नही. मै समझ गया धनी वनने का तरीका क्या है ?' ८

मिश्रण का युग

ससार में आज शुद्ध सत्य का दर्शन ही नही, किंतु शुद्ध असत्य का दर्शन भी दुर्लभ हो रहा है आज तो मिश्रण का युग है, सत्य और असत्य का मिश्रण ही सर्वत्र मिल रहा है

प्रसिद्ध विचारक खलील जिब्रान ने एक वार कहा था—'हमारे पास यदि सिर्फ जहर ही होता तो हम धीरे-धीरे उसे भी औषधि वना लेते, पर हमारे पास शुद्ध जहर भी कहाँ है ? जो है, वह है मधुमिश्रित जहर, और यह शुद्ध जहर से भी भयकर है'

आज का मधुमिश्रित जहर—सत्यमिश्रित असत्य, हमारी चतुरता वन गया है, राजनीति और व्यवहार का आधार वन गया है, हमारी जीवन धुरा आज उसी विपमिश्रित मधु और मधुमिश्रित विष पर टिकी है, वास्तव में यह स्थिति जीवन की अत्यन्त करुण एव भयजनक स्थिति है ○

मूर्ख की संगति

विद्वान् आदमी यदि मूर्खों की सगति करता है, तो वह अपना ज्ञान खो देता है, जैसे कि कस्तूरी हीग की डिबिया में बद होकर अपनी सुगध खो देती है

और यदि अज्ञानी मूर्खों की सगति करे तो क्या होगा .? करेला स्वय ही कडवा और फिर नीम पर चढ गया तो ?

शेखसादी के शब्दो में इसका उत्तर है—'अगर तुम विद्वान् हो तो बेवकूफो की सगति से मूर्ख वन जाओगे, और यदि मूर्ख हो, तो फिर पूरे गधे ही हो जाओगे ।'

मूर्ख को शिक्षा

जो आदमी मूर्ख, अहंकारी और आग्रही को शिक्षा देता है, वह स्वयं ही वास्तवमें शिक्षा पाने के योग्य है. क्योकि ये तीनों, अपने को अधिक समझदार मानते है और शिक्षा देनेवाले को मूर्ख. फिर उन्हें शिक्षा देकर स्वयं को मूर्ख क्यो वनाया जाय ? ◊

मौन के दो रूप

मौन के दो प्रकार है—

१ मूढ-मौन

२ अन्त करण का मौन.

मूढ मौन ज्ञान एव प्रेरणा से शून्य होता है, उसमें मूकता अवश्य रहती है, पर अन्तदर्शन की प्रेरणा अथवा प्रकाश नही होता, वह एक प्रकार की अध-कार युक्त मूढता है

अन्त करण का मौन—शक्ति का स्रोत है. उसमें सर्जन की प्रेरणाएँ तथा जागृति रहती है उसमे अन्तर-दर्शन होता है, मन में ईश्वरत्व की अनुभूति जगती है

इस मौन को प्राप्त करने का साधन है—ध्यान। अर्थात् वृत्तियो का अन्तरागमन। जीवन की अन्त-मुर्खता।

आइन्स्टीन ने इसी मौन को सफलता का मूलमत्र कहा है और सर्जनशक्ति का स्रोत माना है ◊

मौन रहना सीखो

एक शिक्षक गधे को बोलना सिखाने के काम में जुटा. वह दिन-रात उस पर मेहनत करता, अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगाकर उसे बोलना सिखाने की चेष्टा करता उस शिक्षक का यह बाल-प्रयत्न देखकर एक विद्वान ने कहा—"तुमने इतनी मेहनत की. मगर यह गधा तुमसे बोलना नही सीख पाया, क्या ही अच्छा हो, तुम इससे चुप रहना सीखलो."

दिन भर बड़बड़ाने से अच्छा है, पशु की भाँति मौन रहना।

◊

मोक्ष

आचार्य शकर से एकवार किसी ने पूछा—मोक्ष कव और कैसे प्राप्त होता है ?

आचार्य ने दार्शनिक भाव-भगिमा के साथ उत्तर दिया—

"वासनाप्रक्षयो मोक्षः"

वासना का क्षय ही मोक्ष है

पूछा गया—वासना किसे कहते है ?

वासना का स्वरूप वताते हुए आचार्य ने कहा—

आसक्ति और आग्रह ही वासना है. वे तीन प्रकार की है —

१ लोक वासना—(विषयासक्ति)

२ शास्त्र-वासना—(शास्त्रो का दुराग्रह)

३ देह-वासना—(देह पर ममत्व)

वस, इन तीनो प्रकार की वासना का क्षय होने पर ही मोक्ष प्राप्त हो सकता है

रसना-विजय

जीभ का एक नाम है—'रसना' अर्थात् रस-ग्रहण करनेवाली. इसको जब तक विजय नही किया जाता, तब तक अन्य इन्द्रियो पर विजय प्राप्त नहीं की जा सकती. श्रीमद्भागवत मे कहा है—

तावज्जितेन्द्रियो न स्याद् विजितान्येन्द्रियः पुमान्,
न जयेद्रसनं यावत् जित सर्वजिते रसे

जब तक मनुष्य अपनी रसना—जिह्वा पर विजय प्राप्त नही कर लेता तब तक वह जितेन्द्रिय नही कहा जा सकता. जिसने रसना को जीत लिया उसने सब कुछ जीत लिया.

वस्तुतः 'रसना' ही सब इन्द्रियों को रस-प्रदान करती हैं. इसका 'रस' जीतने पर ही समस्त इन्द्रियां जीती जा सकती है. ◊

रात्रि-जागरण

जो व्यक्ति भक्ति का ढोंग रचाकर रात-भर जगता है, प्रार्थना और स्तुतियो से रात्रि-जागरण करता है, मगर द्वार पर आये किसी दीन-दुखी को घूरकर भगा देता है, उसके रात्रि-जागरण और रात भर पहरेदारी करनेवाले चौकीदार के रात्रि-जागरण मे क्या अन्तर है ?

भक्ति के साथ यदि दया नही है, दिखावे की भावना है, तो वह भक्ति निरर्थक है. ⸰

राजा की मैत्री

राजाओ की मित्रता और वच्चो की प्यारी-प्यारी वातो पर भरोसा करनेवाला कभी धोखा खा जाता है. क्योकि राजाओ के हजार दिल होते हैं और वच्चों के भी.

४

रूप और गुण

एक सुन्दर मोटे-ताजे शरीरवाले मूर्ख ने किसी दुवले-पतले बुद्धिमान को देखकर मजाक किया

बुद्धिमान ने उत्तर दिया—"एक अरवी घोडा चाहे कितना ही दुवला-पतला क्यो न हो, फिर भी हजारो गधो से अच्छा होता है".

एक शहद की बूद चाहे छोटी-सी ही क्यो न हो, पर समुद्र के समस्त खारे पानी से तो श्रेष्ठ ही है.

४

लहरे : तूफान

मन में जब काम, क्रोध, द्वेष आदि विचारों की छोटी-छोटी लहरे उठ रही हो, तो उस समय किसी कुसग से अवश्य बचते रहो· अन्यथा वे विचार-तरगे कुसंग की हवा का बल पाकर कही समुद्री-तूफान का रूप धारण न करले.

आचार्य नारद की सूचना है—

तरंगायिता अपीमे संगात् समुद्रायन्ति·

—नारदभक्ति सूत्र ४५

ये विचार-तरंगे ही दुःसग की पवन पाकर बढ़ते-बढते समुद्र बन जाती है·

वातावरण

प्रकृति मनुष्य की धात्री है, वह केवल उसको जन्म देकर छोड देती है, उसका निर्माण, सस्कार, परिष्कार, वातावरण पर निर्भर करता है.

गीली मिट्टी को जैसे साँचे मे ढाला जाये, वैसा ही आकार वन जाता है, यही वात मानव स्वभाव की है प्रसिद्ध नृतत्त्वशास्त्री डा० क्रोनर का कथन है—मनुष्य का निर्माण प्रकृति नही, वातावरण करता है और सभ्यता का निर्माण सस्कार करते है

चीन के लोग शोकप्रदर्शन करने के लिए सफेद रग का प्रयोग करते है, जव कि पाश्चात्य देशो तथा भारत मे शोक का प्रतीक काला रग है अधिकाश जातियो के लोग मृत्यु के समय रोते है, जव कि साइबेरिया के 'कोरमान' लोग मृत व्यक्ति पर ताश खेलते और हँसते है

इससे प्रकट होता है, मानव जैसे वातावरण में पलता है उसके रहन-सहन के तरीके और उसकी सभ्यता भी उसीके अनुरूप ढलती है ◊

विद्वान कैसे बने ?

ईरान के एक प्रसिद्ध विद्वान हजरत ईमाम महमूद मुर्शिद गजाली से एक बार किसी ने पूछा—"आप इतने बडे ज्ञानी कैसे वने और कैसे इस उच्च पद पर पहुँच गए ?"

गजाली ने विनम्रता के साथ कहा—"मै जिस वात को नही जानता था, उसे पूछने में कभी शर्म नही की. जैसे-जैसे पूछता, मेरा ज्ञान बढता गया और लोग मुझे आलिम (विद्वान्) समझने लगे."

इसीलिए तो कहा है—"जिज्ञासा ज्ञान का द्वार और विज्ञान का उत्स है."

विनम्रता

सभ्यता ने कहा—मैं अपने परिचितो का सदा आदर करती हूँ

विनम्रता ने कहा—मैं अपने परिचितो और अपरिचितो, सबका आदर करती हूँ.

विवेक

आवश्यकता और आकांक्षा इन दोनों में बहुत वड़ा भेद है, इस भेद को साधारण मनुष्य नही समझ सकता

रोटी की भूख—मनुष्य की आवश्यकता है,

मिष्टान्न की भूख, भूख नही—आकांक्षा है·

इन दोनो का भेद करना ही विवेक है· आवश्यकता पूर्ति में आनन्द का अनुभव हो सकता है, पर आकाक्षा की पूर्ति तो हो पाना ही कठिन है· ◊◊

विज्ञान की आयु

वर्तमान विज्ञान ने अपने भौतिक उपकरणो के सहारे पृथ्वी के सम्बन्ध मे कुछ निष्कर्ष निकाले है, जो इस प्रकार है —

पृथ्वी का जन्मकाल—	२०० करोड वर्ष पूर्व
पृथ्वी पर प्राणियो का उद्भवकाल—	३० ,, ,, ,,
मनुष्य का जन्मकाल—	३ लाख ,, ,,
ज्योतिर्विद्या का जन्मकाल—	३ हजार ,, ,,
दूरवीक्षण यत्र का आविष्कार—	३ सौ ,, ,,
आधुनिक विज्ञान का जन्मकाल—	३ ,, ,, ,,

—सर जेम्स जीन्स

शान्ति का उपाय

एक सम्राट ने किसी विद्वान् से पूछा—

दु:ख में शान्ति का उपाय क्या है ?

विद्वान् ने कहा—'साहस'

और सुख में....?

'सयम'•

दु ख को साहसपूर्वक झेलो और सुख का संयमपूर्वक उपयोग करो• तो तुम दोनो ही स्थितियो में शाति प्राप्त कर सकते हो ।

शिर और शिख

देह नश्वर है, धर्म अविनाशी है·

देह मर है, धर्म अमर है

देह पुन· पुन· प्राप्त हो सकती है, पर धर्म पुनः पुनः नही मिल सकता—

'बोही य से णो पुणरावि सुल्लह'

धर्मका वोध पुनः पुन प्राप्त होना सरल नही है इस

महान् विचार ने—देह की ममता का परिवर्जन किया है और धार्मिकनिष्ठा व दृढता को बढाया है इसी प्रकार के निष्ठाशील साधक ने यह कहा था —'चइज्ज देह न हु धम्म सासण'—शरीर छोड़ दो, पर धर्म मत छोड़ो इसी निष्ठा के चमत्कार ने धर्मद्रोही सम्राट औरगजेव को विमूढ़-स्तब्ध बना दिया था.

औरगजेव ने जब गुरु तेगवहादुर से कहा—"कुछ चमत्कार वताओ, वर्ना तुम्हारे मुंह में गौमास भर दिया जायेगा."

गुरु ने वादशाह को ललकारते हुए कहा—"चमत्कार वताना जादूगर का काम है, ईश्वरभक्त का नही" और गुरु हँसते-हँसते वादशाह की क्रूर तलवार के नीचे सिर धरकर खडे होगए और ललकार उठे—"तुम्हारी तलवार मेरा शिर ले सकती है, पर शिख (धर्म) नही."

वास्तवमें यही तो धर्मनिष्ठा का जादू है—जो शिर देकर भी 'शिख' की रक्षा करता है. ◊

शब्दजाल

जो विद्वान् एव पंडित केवल शब्दजाल फैलाकर जनता को विमूढ वनाना चाहते है, हृदयको स्पदित कर मानवता का उद्वोधन करने वाली वाणी जिनके पास नही है, उनके लिए शकराचार्य ने एक वार कहा था—

"शब्दजालमहारण्य चित्तभ्रमणकारणम्."

इन पडितो का वाग्विलास, शब्दजाल का महा-अरण्य है, जिसमे चित्त भटक जाता है

इन्ही वाद-विवादप्रिय पडितो पर आक्षेप करते हुए महाराष्ट्र के भक्तकवि शेख मोहम्मद जो कि रामदास, ज्ञानेश्वर और तुकाराम की भक्त परपरा के ही एक सतकवि थे. उन्होने एक अभग मे कहा है—

अक्षरे वाचु शिकले,
हृदयी वाचु चुकले.

इन पडितो ने अक्षर पढना तो सीखा है, मगर हृदय को पढना एकदम भूल गये

◇

सच्चा धन

सोना, हीरा, मोती—वास्तव मे तो मिट्टी है, जगद्-व्यवहार के लिए मनुष्य ने इनमें धन की कल्पना करली है और उनसे मोह करने लगा सच्चा धन तो है—'सुयश' जोकि शुभ कृत्यो से प्राप्त होता है.

विलियम शेक्सपियर का एक कथन मुझे याद आता है—सुकर्मो के परिणामस्वरूप प्राप्त होनेवाला यश ही किसी पुरुष या नारी की आत्मा का रत्न है, सच्चा धन है जो मेरा धन चुराता है, वह दर-असल कुछ नही चुराता धन तो हजारो व्यक्तियो का गुलाम रह चुका है, आज मेरा है, कल दूसरे का."

८

सबसे बड़ा दानी

एक सूक्ति है—दो बातें भूल जाओ—और दो याद रखो—

दान देकर भूल जाओ, लेकर याद रखो.

उपकार करके भूल जाओ, कराकर याद रखो

दान देना, पर-उपकार करना महानता है, पर इससे भी बडी महानता है—दान देकर दान का अहकार न करना, उपकार करके—यह अनुभव न करना कि मैंने किसी का उपकार किया है

इस भावनाका विश्लेषण करते हुए प्रसिद्ध विचारक खलील जिब्रान ने लिखा है—

प्रश्न—दुनिया मे सबसे बडा परोपकारी कौन है ?

उत्तर—रात-दिन अपने काम मे लगा हुआ रेशम का कीडा, क्योंकि जगत को वह कितनी मूल्यवान वस्तु देता है, इसका स्वय उसको तनिक भी ज्ञान नही है

वास्तव मे दान देकर उसका ज्ञान (भान) न रखना यही तो दानशीलता है.

सत्य

जिस सत्य को प्रकट करने से यदि किसी का अहित होता हो तो अच्छा है कि उसे प्रकट ही न किया जाय.

जिस मिठाई को खाने से यदि रोग होता हो तो अच्छा है कि वह मिठाई खाई ही न जाय.

सत्य वही श्रेष्ठ है, जो-पथ्य हो.

तथ्य वही अच्छा है, जो कथ्य हो.

स्थायित्व के लिए

शेखसादी ने एक जगह लिखा है—

"जो वस्तु शीघ्र प्राप्त होती है, वह शीघ्र ही समाप्त भी हो जाती है कहते है—पुराने जमाने में चीन के कारीगर चालीस वर्ष में चीनी का एक प्याला वना पाते थे, मगर ईरान के कारीगर एक दिन मे सौ प्याले वना डालते इसीलिए चीनी प्याले की कीमत वहुत अधिक होती और ईरान के प्याले की बहुत कम.

पक्षी का वच्चा ज्योही अडे से निकलता है, भोजन की खोजमे उडाने भरने लग जाता है, किन्तु मनुप्य का वच्चा धीरे-धीरे होश सभालता है और बहुत वडा होने के वाद अपनी जीविका की फिकर करता है इसीलिए पक्षी कोई प्रगति नही कर सका, किंतु मनुप्य धीरे-धीरे वढता-वढता आज प्रगति शिखर पर पहुँच गया

स्थायित्व के लिए स्थिरता और क्रमशीलता जरूरी है

सफलता

धन की सफलता—दान में है

शक्ति की सफलता—सेवा में है.

बुद्धि की सफलता—विवेक में है.

दान, सेवा और विवेक—इन तीनो के मिलन से ही जीवन में सच्ची सफलता प्राप्त होती है.

सभी दिन अच्छे है

एक राजा ने किसी देश पर विजय प्राप्त करने के लिए सेना को कूच करने का आदेश दिया

ज्योतिषी ने निवेदन किया—महाराज ! आज का दिन अच्छा नही है, कल प्रस्थान कीजिए

राजा ने मुस्कराकर कहा—जिसको अपने पुरुषार्थ पर विश्वास है और जो अपनी शक्ति पर आश्रित है उसके लिए सभी दिन अच्छे है.

साकार ईश्वर

ईश्वर निराकार है.

हाँ, पर वह साकार भी है ईश्वर का साकार रूप देखने को तब मिलता है जब किसी मानव आत्मा मे दया, करुणा और स्नेह की उर्मियाँ उछलने लगती है कुछ क्षण के लिए ईश्वर उस आत्मा में साकार हो उठता है और उस दर्शनीय रूप को हम कह उठते है—मानवता!

मानव में, मानवता का रूप किसी भी क्षण में, किसी भी स्थल पर, किसी भी देश और परिस्थिति में व्यक्त हो सकता है. सूने खंडहरो में और फटे चीथड़ों में भी उसका रमणीयरूप छविमान होता दिखाई देता है.

सीखते रहो

भगवान महावीर का एक वचन है—कंखे गुणे जाव सरीरभेउ—जव तक शरीर है, जीवन है, तव तक गुण-विद्या सीखते ही रहो. गुण अपनाते रहो इस सदर्भ मे जब मैंने यूनान के दार्शनिक प्लेटो का यह प्रसग पढा तो हृदय विद्या एव जिज्ञासा की अविचल सधि से जुड़ गया

एक वार प्लेटो से उनके किसी एक मित्र ने पूछा—आपके पास तो दुनियाँ के वडे-वडे विद्वान् कुछ-न-कुछ सीखने के लिए आते है फिर यह क्या वात है कि आप इतने वडे विद्वान् होकर भी दूसरो से सीखनेके लिए हमेशा तैयार रहते हैं भला, बताइये तो आप कव तक सीखते रहेगे ?

तत्त्वज्ञानी प्लेटो ने सहजभाव से उत्तर दिया—'जब तक दूसरो के पास से कुछ सीखने में मुझे शर्म नही लगेगी, तव तक . .' ○

सुख की परिभाषा

एक दार्शनिक से सुख की परिभाषा पूछी गई. दार्शनिक ने वताया—'सुख' हमारी उस अवस्था का नाम है, जो मिले और हम अन्तःकरण से चाहे कि वस, अव यह बनी रहे.

सचमुच यह अवस्था एक उच्चतम अवस्था है और उसकी उपलब्धि बाह्यपरिस्थितियो पर नही, अन्तर स्थितियो पर ही निर्भर करती है

सेवा का मार्ग

चीन के महान् सत कन्फ्यूसस से किसी ने पूछा—
'हम अपने देवताओ की सेवा कैसे करे ?'

कन्फ्यूसस ने हँसकर कहा—'हम लोग कितने मूर्ख है, मनुष्य की सेवा की विधि तो जानते ही नही और देवताओ की सेवा का मार्ग जानना चाहते है.'

संघर्ष

सत्य और सत्य में कभी टकराहट नही होती. न्याय और न्याय में कभी सघर्ष नही होता

सघर्ष और टकराहट हमेशा असत्य और अन्याय से ही पैदा होती है

दो ईमानदार आदमी कभी भी परस्पर झगडेंगे नही और न ही न्यायालय में जायेगे. चूंकि वे न्याय और सत्यको जानते है, तो फिर उसके लिए झगड़ने की जरूरत ही नही पडती.

न्यायालय सत्य और सत्य का झगड़ा निपटाने के लिए नही, किन्तु सत्य को असत्य के पंजे से बचाने के लिए ही है. और जब न्यायालय स्वय असत्य के पजे से दब जाता है तो फिर बिचारे सत्य की छीछालेदार हुए बिना नही रहती.

आज का समस्त सघर्ष, सत्य को असत्य से बचाने का सघर्ष है.

सोना

ससार में सबसे वडा प्रेम व बधन है स्त्री का स्त्री के लिए मनुष्य स्वय को बर्बाद कर देता है· पर देखता हूँ धन का बधन स्त्री से भी वडा है· धन के मोह मे फसा मनुष्य स्त्री को भी छोडकर दर-दर की ठोकरे खाता है, विदेशो में भटकता हुआ जीवन गुजार देता है

गिरधर कविराय ने एक ऐसी स्त्री को देखा, जो विवाह होकर घर मे आई, उसी दिन उसका पति धन कमाने के लिए परदेश चला गया. वह सोने की फिकर मे अपनी पत्नी को भी भूल गया· पति को प्रतीक्षा मे बैठे-बैठे भवर से काले केश चादी से सफेद होगए पर तव भी पतिदेव सोना लेकर नही लोटे तव व्यतिथ पत्नी कहती है—

सोना लेने पी गये, सूना करि गये देश,
सोना मिला, न पी फिरा, रूपा ह्वै गये केश.
रूपा ह्वै गये केश रोय रग-रूप गवाया,
सेजन को विसराय पिया विन कवहुँ न पावा.
कह गिरधर कविराय लोन विन सवै अलोना,
वहुरि पिया घर आव कहा करिहौ ले सोना

संपत्ति

जो सपत्ति आई है वह एक दिन चली भी जायेगी. जो उसका सदुपयोग कर लेता है सपत्ति उसकी हो जाती है, अन्यथा वही मनुष्य को समाप्त कर डालती है

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र बड़े ही उदारमना व्यक्ति थे. गरीबो की सहायताके लिए उन्होने न केवल अपनी सपत्ति लुटायी, अपितु कई मित्रो का कर्ज भी हो गया था एकबार बनारस नरेश ने उनसे कहा—"बबुआ! तुमने तो दौलत का सत्यानाश कर डाला"

भारतेन्दु मुस्कराते हुए बोले—"महाराज! दौलतने तो मेरे दादा को खाया, मेरे बाप को भी खालिया और मुझे भी खा जाना चाहती थी मैने सोचा—इससे तो अच्छा है कि मै ही इसे खा डालूँ"
वास्तव में सत्पुरुष सपत्ति के हाथो में नही नाचते, उसे ही अपने इशारो पर नचाते है.

श्रेष्ठ कौन ?

यूनानके एक तत्त्वज्ञानीसे किसीने पूछा—"अकिंचन साधु और धनवान गृहस्थ दोनोमे श्रेष्ठ कौन है ?"

तत्त्वज्ञानी ने उत्तर दिया—"अकिंचन साधु श्रेष्ठ है, क्योकि उसका हृदय सदा परमात्मा में लगा रहता है, जवकि धनवान गृहस्थ के हृदय मे सदा शैतान वसा रहता है"

× × ×

परमभक्त हुसेन से किसी ने एक कुत्ते की ओर अगुली करके पूछा—"आप दोनोमे श्रेष्ठ कौन है ?" हसते हुए हुसेनने उत्तर दिया—"जव तक मै अपना जीवन ईश्वरभक्ति और पुण्यकार्यो मे व्यतीत करता हूँ तव तक कुत्ते से मै श्रेष्ठ हूँ, किन्तु जव मैं पापमय जीवन जीने लगता हूँ तो यह कुत्ता मेरे जैसे सौ हुसेनो से भी श्रेष्ठ है

इसी उत्तर की छाया मे पढिए भक्त सूरदास का यह पद—'भजन विनु नर कूकर-शूकर जैसो' ◊

श्रेय

हम जब कभी, किसी काम में असफल हो जाते है, तो तुरन्त उस असफलता का दोष किसी अन्य के सिर मढकर स्वय उससे बचने की चेष्टा करते है. यह एक प्रकार की आत्मवचना की भूमिका है.

यदि हम अपनी सफलता का श्रेय भी असफलता की तरह दूसरोको देना प्रारम्भ करदे, तो सफलता में हमें, आत्मविभ्रम एव अहकार पैदा न होगा. हम अपनी परिस्थिति, शक्ति एव साधनो का सही विश्लेषण कर आत्मज्ञान प्राप्त कर सकेंगे. ◊

श्रेय और प्रेय

भारतीय चिन्तन ने श्रेय को ग्राह्य और प्रेम को त्याज्य बताया है

साधारण मानव मन एव इन्द्रियको प्रिय लगनेवाली वस्तु की आकाक्षा करता है, किन्तु ज्ञानी आत्मा का हित करनेवाली वस्तु ही चाहता है

ग्रीस का तत्त्वज्ञानी सुकरात नित्य प्रभु प्रार्थना करता था उसकी प्रार्थना का सूत्र था—

"प्रभो ! मैं कभी माँगू या न माँगू, किन्तु मुझे वह वस्तु कभी मत देना, जो सुन्दर तो लगे परन्तु मुझे अशुभ एव अमगल की ओर ले जाती हो"

हथैली और थैली

जिसकी हथैली गरीवो की सेवा के लिए खुली है, उसकी थैली खाली है तब भी भरी है.

जिसकी हथैली गरीबो के लिए बद है, उसकी थैली चाहे भरी हो, तव भी संसार मे खाली ही कहलायेगी.

दान से धन का गौरव वढ़ता है, जैसे वर्षासे बादलो का, फलो से वृक्ष का.

हमारा हृदय

हमारा छोटासा हृदय सृष्टिचक्र का नियता है, समूची पृथ्वी का सचालक है यह वात अब केवल उदात्त कल्पनाशील चिन्तको की वाणी ही नही, अपितु एक वैज्ञानिक सत्य भी वन गया है

हृदय की कार्यशक्ति का विश्लेषण करते हुए 'विज्ञान की सचाई' (फेक्ट्स आव साइस) मे वताया है—"हमारा हृदययत्र समस्त दिन भर मे जितना कार्य करता है, वह कार्यशक्ति यदि वोझ उठाने के काम मे लायी जाय तो उससे ५४० मन वोझ पृथ्वी से दो फुट ऊपर उठाया जा सकता है और यह अद्‌भुत हृदययत्र १२ घटोमे जितनी शक्ति खर्च करता है, उससे एक पूरी रेलगाडी २० मील प्रति घटे की रफ्तार से चल सकती है"

मुनिश्रीजी के साहित्य पर

विद्वानो के महत्वपूर्ण अभिप्राय

आधुनिक विज्ञान और अहिंसा

—लेखक : गणेशमुनि शास्त्री, साहित्यरत्न

—भूमिका : विद्वद्वर्य मुनि कांतिसागर जी

—प्रकाशक . आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली–६

—मूल्य : तीन रुपये पचास पैसे.

☆ विज्ञान और अहिसा दोनो ही वडे जटिल विपय है, फिर भी इन्हे जिस सरल और आकर्पक रूप मे उपस्थित करने का विद्वान लेखक ने प्रयास किया है, वह श्लाघनीय है . कम से कम शब्दो मे अधिक से अधिक जानकारी देने का उपक्रम, पुस्तक की अपनी विशेपता है, तभी तो लेखक ने 'प्राकृतिक और आध्यात्मिक' से प्रारम्भ कर 'विश्वशान्ति और अहिसा', 'सयुक्त राष्ट्रसघ' तथा 'अहिसा की सार्वभौम शक्ति' आदि अनेक विषयो की चर्चा की है . प्रस्तुत पुस्तक अहिसा सम्वन्धी विचारो की निर्माण दिशामे अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी, ऐसा मेरा विश्वास है भापा प्रवाहशील है, सवल है छपाई, सफाई, गेटअप आकर्पक है

—उपाध्याय अमरमुनि

राजगृह पटना, ३ नवबर १९६२

★'आधुनिक विज्ञान और अहिंसा' में श्री गणेशमुनि शास्त्री ने वर्तमान जीवन और जगत की विभीषिकाओं पर दृष्टि केन्द्रित करते हुए अपने अनुभवों द्वारा विज्ञान और आध्यात्मिक संस्कृति का समन्वयात्मक अध्ययन सरलतापूर्वक प्रस्तुत कर रुचिशील पाठको का ज्ञान संवर्धन किया है. विज्ञान जैसे बहिर्जगत् से संबद्ध विषय के धर्म, अहिंसा और दर्शन जैसे आध्यात्मिक जीवन-प्रेरक तत्त्वों से सम्बन्ध स्थापित कर धर्म और समाज की जो सेवा की है, वह स्तुत्य है.

—मुनि कांतिसागर

★'आधुनिक विज्ञान और अहिंसा' एक आदर्श कृति है. युवक - क्रान्तदर्शी सत श्री गणेशमुनि शास्त्री का प्रस्तुत उपक्रम आधुनिक युग की साहित्य सर्जना मे बेजोड है

—'श्रमण' वाराणसी

★विज्ञान और वैज्ञानिक प्रणालियां मानवता द्वारा अहिंसा का मार्ग सरलतासे अपनाने मे किस प्रकार सहायक हो सकती है, इस विषय में श्री गणेश मुनिजी के जो विचार हैं, वे जनता के सही मार्गदर्शन में उपयोगी सिद्ध होंगे.

—डा. दौलतसिंह कोठारी

अध्यक्ष . विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, दिल्ली

★'आधुनिक विज्ञान और अहिंसा' के लेखक मुनिराज को न केवल विज्ञान मे ही रुचि है, अपितु धर्म शास्त्रो के साथ-साथ वैज्ञानिक साहित्य का भी सुन्दर अध्ययन है प्रस्तुत कृति भावी अहिंसा विश्वविद्यालय के विद्यार्थियो के पाठ्यक्रम मे उपयोगी सिद्ध होगी.

—डा. डी. बी. परिहार

★गणेश मुनि शास्त्री की 'आधुनिक विज्ञान और अहिंसा' पुस्तक देखी, पढी—आद्य से इति तक. वस्तुतः यह मुनिश्री की एक सुन्दर एवं मौलिक कृति है. प्रसन्नता और बधाई !

—सुरेश मुनि, शास्त्री

★पुस्तक की छपाई, गेटअप आदि काफी आकर्षक वन पडे है पुस्तक का केवल जैन जगत मे ही नही, वरन् जैनेतर जगत मे भी स्वागत होगा हमारे राजनीतिज्ञो के लिए यह पुस्तक पथ-प्रदर्शक का कार्य करेगी लेखक और प्रकाशक दोनो ही वधाई के पात्र है

—'ललकार'
१६ अगस्त, १६६२ जोधपुर

★यदि प्रस्तुत पुस्तक को प्रयत्न करके किसी पाठ्यक्रम मे निश्चित करा दिया जाय, तो जनता का अधिक लाभ होगा. पुस्तक सर्वरूपेण पठनीय है.

—'जिनवाणी' जयपुर (राजस्थान)

साथ अहिंसा के अगर,
हो पढ़ना विज्ञान.
पाठक ! पढ़िये प्यार से,
यह पुस्तक गुण-खान.
सरल सरस फिर सारयुत,
कृति ऐसी नहिं अन्य.
मुनि 'गणेश' शास्त्री-गुणी-
जी को शतशः धन्य !

—चन्दनमुनि [पंजाबी]

नोट —

प्रस्तुत पुस्तक की सुन्दर समीक्षा दैनिक समाचार पत्रों के अतिरिक्त 'रेडियो स्टेशन' दिल्ली से भी समीचीन समीक्षा हो चुकी है.

अहिंसा की बोलती मीनारें

—लेखक : गणेश मुनि, शास्त्री साहित्यरत्न

—भूमिका : यशपाल जैन, दिल्ली

—प्रकाशक : सन्मति ज्ञान पीठ, आगरा-२

—मूल्य : चार रुपये, कलात्मक आवरण

★ आज सब ओर प्रेम, करुणा और बन्धुता के स्थान पर

आशका, भय और अविश्वास का बोलबाला है ये सब शान्ति के लिए खतरे हैं, जिनसे त्राण पाने का यदि कोई अमोघ अस्त्र है, तो वह अहिंसा ही है जहा अहिंसा है, वहा जीवन है और जहा अहिंसा का अभाव है, वहा जीवन का अभाव है इस पुस्तक मे अहिंसा की इसी विराट् और व्यापक शक्ति का ऐतिहासिक, सैद्धान्तिक और व्यावहारिक दृष्टि से सूक्ष्म विवेचन किया गया है पुस्तक सात खण्डो मे विभक्त है और प्रत्येक खण्ड को 'बोलती मीनार' की सज्ञा दी गई है प्रथम खण्ड मे अहिंसा के आदर्श को समझाते हुए, विराट् दृष्टि और विभिन्न मतो मे उसका निरुपण किया गया है . दूसरे अध्याय मे सामाजिक हिंसा के विचित्र रूप शोषण, दहेज आदि की चर्चा करते हुए बताया गया है कि मानव जाति एक है .तीसरे खण्ड मे अपरिग्रहवाद की विस्तार से चर्चा की है. चौथे और पाचवे अध्याय मे अहिंसा के बुनियादी सिद्धान्त अनेकान्तवाद और शाकाहार की चर्चा की गई है . छठे खण्ड मे रेडियो सक्रियता, आणविक शक्ति, अणु-परीक्षण आदि का उल्लेख करते हुए यह बताया गया है कि विज्ञान पर अहिंसा की विजय किस प्रकार होती जा रही है और उसका समन्वय कैसे हो सकता है अन्तिम सातवे खण्ड मे अहिंसा और विश्वशान्ति जैसे ज्वलत प्रश्न पर विभिन्न

शीर्षको के अन्तर्गत विस्तार से चर्चा करते हुए इस दिशा मे भारत के योगदान की चर्चा की गई है·

पुस्तक मे अहिंसा के सैद्धान्तिक और व्यवहारिक पक्ष पर काफी सुपाठ्य सामग्री दी गई है भाषा सरल सुबोध और शैली इतनी रोचक है कि सीमित ज्ञान रखनेवाले व्यक्ति भी इसे आसानी से समझ सकते है गेटअप और छपाई की दृष्टि से भी पुस्तक अच्छी और विषय वस्तु के कारण तो सग्रहणीय है ही

–दैनिक हिन्दुस्तान

४ जनवरी १९७०, दिल्ली

★प्रस्तुत पुस्तक में विद्वान लेखक ने अहिंसा की व्यवहारिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए, उनके विभिन्न अंगों का विशद विवेचन किया है. इसे पढ़कर अहिंसा की तेजस्वी शक्ति का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है.

पुस्तक सात खण्डों में विभक्त है. पहले खण्ड में उन्होने अहिंसा के आदर्श को समझाया है. दूसरे में मानव जाति एक है, इसको स्पष्ट किया है. तीसरे में अहिंसा की साधना का ढंग बताया गया है. इसी खंड मै अपरिग्रहवाद की विस्तार से चर्चा है. बाद के चार अध्यायो में सरल सुस्पष्ट भाषा में अहिंसा के बुनियादी सिद्धान्तों का विवेचन प्रस्तुत है. अहिंसा और विज्ञान के समन्वय पर भी बल

दिया गया है. अत मे अहिंसा एवं विश्व शान्ति के ज्वलंत प्रश्न पर विचार किया गया है.

पुस्तक कई दृष्टियों से पठनीय, चिन्तनीय एवं संग्रहणीय है. आशा है कि साहित्यिक जगत मे यह पूर्ण ससम्मानित होगी.

—नवभारत टाइम्स, १४ दिसबर १९६९, बम्बई

☆अहिंसा की व्यावहारिक पृष्ठभूमि को स्पर्श करते हुए उसके विभिन्न अगो का विशद विवेचन श्री गणेश मुनिजी शास्त्री ने प्रस्तुत पुस्तक मे किया हैं अहिंसा के सम्बन्ध मे लेखक निष्ठावान हैं और साथ ही व्यवहारिक बुद्धि से युक्त भी अध्ययन एव अनुभव के आधार पर की गई उसकी विवेचना अहिंसा मे निष्ठा रखने वाले प्रत्येक पाठक के लिए उपयोगी सिद्ध होगी, ऐसा मेरा दृढतम विश्वास है

—उपाध्याय अमरमुनि

☆अपने बहुत-से लेखो तथा भाषणो मे मैने इस बात पर जोर दिया है कि हमें सरल, सुबोध भाषा मे कुछ ऐसी पुस्तकें तैयार करनी चाहिए, जो सामान्य बुद्धि और सीमित ज्ञान रखनेवाले व्यक्तियो की भी समझ में आ जाय और वे इन्हे पढकर जान सकें कि अहिंसा की शक्ति कितनी तेजस्वी है और उन पर आचरण करके किस प्रकार राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय जीवन जगत में सायी शांति

और सुख स्थापित किया जा सकता है. इस दृष्टि से प्रस्तुत पुस्तक को देखकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई. इसके लेखक जैन मुनि हैं और इन्होने अहिंसा तथा सम्बन्धित सभी विषयो का सूक्ष्म अध्ययन एवं चिन्तन किया है.

—यशपाल जैन, देहली

★श्री गणेश मुनिजी शास्त्री की 'अहिंसा की बोलती मीनारे' अहिंसा का आधुनिक शास्त्र है इसे अहिंसा की गीता कहे, तो कोई अतिशयोक्ति नही है

—साध्वी उज्ज्वलकुमारी

★'अहिंसा की बोलती मीनारें' के द्वारा कृष्ण के प्रेम को, महावीर की अहिंसा को, गांधी जी की सत्याग्रहवादी भाषा को लेखक ने नवयुग की चेतना के समक्ष बड़ी सज-धज के साथ रखा है.

—विजय मुनि शास्त्री

★पुस्तक मे सर्वत्र लेखक की सूझ-बूझ और चिन्तन पूर्ण अनुभूतियो का दिग्दर्शन होता है. ऐसी उपयोगी पुस्तक-प्रकाशन के लिए लेखक एव प्रकाशक को बधाइया.

—अजित शुकदेव

★अहिंसा के विभिन्न पहलुओं को लेकर प्राञ्जल शैली में लिखी गई यह कृति सर्वोपयोगी है.

—मुनि नेमीचन्द्र

★आज के भयाक्रान्त विश्व को निर्भयता की ओर ले जाने मे यह पुस्तक पूर्णसहायक बनेगी. ऐसा मेरा विश्वास है.

–प्रवर्तक मुनि मिश्रीमल

★ऐसा श्रम साध्य तथा महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ यदि किसी उच्च-स्तरीय परीक्षा के पाठ्यक्रम मे स्वीकृत हो जाय, तो समाज का अधिक हित हो सकता है.

–प्रवर्तक विनयऋषि

★'अहिंसा की वोलती मीनारे' मे लेखक ने अहिंसा का शास्त्रीय चिंतन प्रस्तुत करते हुए उसके व्यावहारिक, आध्यात्मिक और विविध मतो की दृष्टि से सामाजिक मूल्यो पर भी सुन्दर प्रकाश डाला है. भाव-भाषा दोनो ही दृष्टियो से पुस्तक सुन्दर से सुन्दरतर है

–आचार्य मुनि हस्तिमल

★वर्तमान विचार द्वन्द्व की काली निशा में मुनि श्री का प्रस्तुत ग्रन्थ 'अहिंसा की बोलती मीनारें' प्रकाश स्तंभ वनकर विश्व को सही मंजिल की दिशा सुझायेगा. ऐसा विश्वास है.

–मालवकेशरी मुनि सौभाग्यमल

★पुस्तक क्या है ? वर्तमान देश, समाज व राष्ट्र की विभिन्न समस्याओ का उचित समाधान ! राकेटवादी

युग का प्रकाश स्तभ ! प्रत्येक मीनार का विषय बड़ा ही रोचक, दिलचस्प एव ज्ञानवर्धक है.

—पं. शोभाचन्द्र भारिल्ल

★आज के युग को अहिंसा का बोध देनेवाला यह एक सुसस्कृत संयोजन है. —मधुकर मुनि

★छपाई, सफाई और सामग्री की दृष्टि से यह प्रकाशन नि'सदेह अनुपम व उपयोगी है.

—सौभाग्य मुनि 'कुमुद'

पुस्तक क्या है ? दुर्लभ मोती,
हीरे लालों का इक कोष.
हर इक शब्द अहिंसा माँ की,
महिमा का करता उद्घोष.
पढ़-सुन जिसे हजारों-लाखों,
पार करेंगे भवसागर.
गुणी 'गणेश' मुनीश्वर जी का,
ग्रन्थरत्न यह रहे अमर.

—चन्दन मुनि [पंजाबी]

—सम्पादक : गणेश मुनि शास्त्री, साहित्यरत्न

—प्रेरक : श्री जिनेन्द्र मुनिजी

—प्रकाशक : अमर जैन साहित्य सदन, जोधपुर

—मूल्य : एक रुपया पचास पैसे

★प्रस्तुत पुस्तक छ अध्याओ मे विभक्त वह उद्यान है, जिसमे अहिंसा, अस्तेय, सतोष, सयम, प्रेम, हर्ष, सुख, दु:ख, क्षमा आदि विविध विचारो के सुमन खिले है. आशा है, जीवन मे इनकी सुरभि मिलती रहेगी. पुस्तक सग्रह और मनन के लायक है मुनि श्री की इस सुन्दर कृति का सर्वत्र स्वागत हो यही हमारी मगल कामना है

—श्रमण, वाराणसी

★'विचार रेखा' महापुरुषो की दिव्यवाणी एव गंभीर विचारको के विचारो का श्रेष्ठ संग्रह है. मानव जीवन के लिए प्रकाश स्तंभ है.

—विजय मुनि शास्त्री

हाथ में उठा जो देखा, विचित्र 'विचार रेखा',
सबसे निराला लेखा, कविता न गीत है.
अनमोल हीरे पर, ढंग से दिये हैं धर,
जौहरी का जैसा घर, पावन-पुनीत है .

ज्ञानी-ध्यानी महागुणी, पंडित 'गणेश मुनि'
हर बात ऐसी चुनी, जीवन की जीत है.
ज्ञानियों के, गुणियों के, ऋषियों के, मुनियों के,
विविध विचारों का ही यह नवनीत है.

—चन्दन मुनि [पंजाबी]

★मेरे स्नेही साथी गणेशमुनि शास्त्री द्वारा सग्रहीत 'विचार रेखा' एक सुन्दर सकलन है, साधना पथ का ज्योतिर्मय दीपस्तभ है. —मुनि समदर्शी 'प्रभाकर'

★रूप-रंग, साज-सज्जा तथा सामग्री की दृष्टि से 'विचार रेखा' एक उत्तम कृति है, ऐसी उत्तम कृति का साहित्य जगत में स्वागत होना ही चाहिए.

—डा. नृसिंहराज पुरोहित

इन्द्रभूति गौतम : एक अनुशीलन :

—लेखक : गणेश मुनि शास्त्री, साहित्यरत्न
—संपादक : श्रीचन्द सुराना 'सरस'
—भूमिका : डॉ० जगदीशचन्द्र जैन
—प्रकाशक सन्मति ज्ञानपीठ, आगरा-२
मूल्य : चार रुपये,

★प्रस्तुत प्रवन्ध मे गणधर इन्द्रभूति गौतम के विराट् व्यक्तित्व की यथार्थ तसवीर खीची गई है आज तक की साहित्य की अपूर्णता को यह कृति पूर्ण कर रही है.

इस प्रवन्ध के लेखक हैं—श्रद्धेय पण्डित प्रवर श्री पुष्कर मुनि जी म के शिष्यरत्न श्री गणेश मुनि जी शास्त्री, श्री गणेश मुनि जी जैन समाज के एक अनेक पहेलु वाले जगमगाते जवाहिर है. वे कवि भी है और कलाकार भी हैं गायक भी हैं और साधक भी है और वे क्या नही है, यह एक प्रश्न है ?

आप इस प्रवन्ध के लिए अपनी साधु समाज मे "डाक्टरेट" के प्रथम विजेता वनें, यही मनीषा.

—साध्वी उज्ज्वलकुमारी

★श्री गणेश मुनिजी शास्त्री की 'इन्द्रभूति गौतम : एक अनुशीलन' पुस्तक पढी. ग्रन्थ बहुत अध्ययनपूर्ण एवं सुन्दर शैली में लिखा गया है ..यदि वे सुधर्मास्वामी पर भी इसी तरह का एक शोध प्रबन्ध तैयार करें तो समाज की वडी सेवा होगी. **—साहित्य वारिधि अगरचन्द नाहटा**

★विद्वान लेखक को इस 'थीसिस' पर 'डाक्टरेट' मिलनी चाहिए और उन्हे विशेष पद से विभूपित किया जाना चाहिए

इस अनुपम कृति के उपलक्ष मे मैं ज्ञानयोगी श्रीगणेश मुनिजी का तथा सम्पादक वधु का और उनके भाग्यशाली पाठको का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ

—नारायण प्रसाद जैन

★प्रस्तुत पुस्तक में विद्वान लेखक एवं सम्पादकने 'इन्द्रभूति' के उस महामहिम शब्दातीत रूप को शब्द गम्य बनाने का स्तुत्य प्रयत्न किया है. पुस्तक का सरसरी तौर पर अवलोकन कर जाने पर मुझे लगा है—गौतम के व्यक्तित्व की गहराई को श्रद्धा एवं चिन्तन के साथ उभारने का यह प्रयत्न वास्तव में ही प्रशसनीय है तथा एक बहुत बड़े अभाव की संपूर्ति भी.

ऐसे अनुशीलनात्मक विशिष्ट ग्रन्थों से पाठकों की ज्ञानवृद्धि के साथ तत्त्वजिज्ञासा भी परितृप्त होगी—ऐसा विश्वास है.

—उपाध्याय अमर मुनि

★प्रस्तुत समीक्षा कृति 'इन्द्रभूति गौतम : एक अनुशीलन' श्री गणेश मुनि शास्त्री द्वारा लिखी गई है, जिसमे गौतम सम्बन्धी विभिन्न चर्चाएं हुई है विद्वान लेखक ने नातिदीर्घ पुस्तक में ही इन्द्रभूति गौतम के सम्बन्ध मे गहराई से विचार किया है और उनके विद्वत्तापूर्ण असाधारण व्यक्तित्व को प्रथम बार प्रकाश मे लाने का स्तुत्य प्रयास किया है वस्तुत लेखक का यह शोधपूर्ण प्रयास जैन चिन्तन के क्षेत्र मे महार्घ माना जायेगा .. पुस्तक की भापा साफ-सुथरी, प्रवाहपूर्ण और आकर्पक है, लेखन शैली पिच्छिल और मनोज्ञ—सक्षेप मे, पुस्तक शोध-पूर्ण, नये चिन्तन

-को बल देने वाली और ऐतिहासिक संदर्भ को उत्साहित करने वाली है.

—'श्रमण' वाराणसी

★उदीयमान तेजस्वी लेखक श्री गणेश मुनिजी शास्त्री ने प्रस्तुत ग्रन्थ मे 'इन्द्रभूति' गौतम की जीवनी अत्यन्त रस के साथ प्रस्तुत की है, जिसके लिए वे अभिनन्दन के पात्र हैं.

—दुर्लभजी खेताणी
घाटकोपर, बम्बई

★'इन्द्रभूति गौतम . एक अनुशीलन' को पढने से ज्ञात हुआ कि यह एक थीसीस (महानिबध) है. इस प्रकार की पुस्तक लिखनेवालो को विश्वविद्यालय की ओर से पी एच-डी की उपाधि से विभूषित किया जाता है प्रस्तुत ग्रन्थ के लेखक श्री गणेश मुनि जी शास्त्री भी पी एच-डी की उपाधि के योग्य अधिकृत है.

—विनय ऋषि
अहमदनगर (महाराष्ट्र)
१५ - २ - १९७१

गौतम गणधर शिष्य थे, महावीर के खास.
अब तक उनका न लखा, हिन्दी मे इतिहास.
ज्ञानी गुणी 'गणेशजी', शास्त्री सुलझे सन्त,
'इन्द्रभूति-गौतम' लिखा, अद्भुत अनुपम ग्रन्थ.

गुरुवर 'पुष्कर' हैं जिन्हें, मिले महा गुण खान,
उनकी हो न क्यों कहो, कृतियां आलीशान.
जैसा लेखन उच्च है, है सम्पादन उच्च,
भाव भरा मुख पृष्ठ औ, सर्व प्रकाशन उच्च.
गहन मनन अध्ययन औ, चिन्तन देख विशाल.
है अभिनन्दन कर रहा, गद् गद् 'चन्दनलाल'.

—चन्दनमुनि

वाणी-वीणा

—कवयिता : गणेश मुनि शास्त्री, साहित्यरत्न

—संपादक : श्रीचंद सुराना 'सरस'

—भूमिका : डॉ. पारसनाथ द्विवेदी, आगरा

—प्रकाशक : अमर जैन साहित्य सदन, जोधपुर

—मूल्य : दो रुपये पचास पैसे

★'वाणी-वीणा' जीवन की सात्त्विक प्रवृत्तियो की अभिव्यक्ति का काव्यात्मक स्वरूप है. आज के युग वैषम्य और कुण्ठाओ मे पल रहे समाज के लिए इस प्रकार का सगीतात्मक-प्रैषण प्रेरणाप्रद हो सकता है. समभाव, मैत्री-दिवस, प्रेममत्र, धार्मिकता, अहिंसा आदि जैनधर्म से सम्मत उदात्त प्रवृत्तियो पर सुन्दर काव्यात्मक पक्तिया,

प्रस्तुत की गई है—जो लेखक के चिंतन, मनन व अनुभूति की सात्त्विकता का पोषण करती है. कवि की इस मानवतावादी दृष्टि मे ही वीणा का वैशिष्ट्य निहित है.

—नवभारत टाइम्स, मार्च १९७० बम्बई

★'वाणी-वीणा' को पढकर हृदय आनन्द की तरगो मे डूबने लगता है और लगता है कि हम गंगा की पावन धारा में एक बजरे के ऊपर बैठे हो. आज के युग मे ऐसी पुस्तको की पहले से अधिक आवश्यकता है.

—विशम्भर 'अरुण'

वाणी वीणा पढ़ मन मेरा, आनन्द से भर आया.
हरपद के गुञ्जन मे देखो, पत निराला की छाया.
स्वागत है कविराज तुम्हारा काव्य क्षेत्र मे तुम चमके.
नीलगगन में दिनकर के सम, दिन-दिन जगती पर दमके.

—साध्वी उज्ज्वलकुमारी

★'वाणी-वीणा' किसी सम्प्रदाय विशेप का स्वर नहीं, वल्कि सच्ची निष्ठा के साथ मानवीय कर्तव्य कर्मों का स्वर सधान है, जीवन जगत के श्रेयस की पकड है

—डा. पारसनाथ 'द्विवेदी'

★'वाणी-वीणा' मुक्तक रत्नो से सुसज्जित सुन्दर हार-सी एक मौलिक कृति है, जो साहित्य मूर्ति के कण्ठाभरण-सी प्रतीत होती है.

—मुनि कुमद

★'वाणी-वीणा मे कविवर श्री गणेश मुनि शास्त्री ने जीवनोपयोगी-मुक्तक काव्यो की भव्य रचना की है...! सरस्वती के भण्डार मे यह पुस्तक अपना एक विशिष्ट स्थान रखती है. कवि की कल्पना मधुर है भाषा प्राजल है और शैली प्रवाहमयी है. आशा है कि प्रत्येक अध्येता 'वाणी-वीणा' से प्रेरणा प्राप्त कर अपने जीवन को प्रशस्त बनाने का यत्न करेगा

—विजय मुनि, शास्त्री

'वाणी-वीणा' का हर मुक्तक,
मुक्ति दिखाने वाला है.
दर्द भरी इस दुनिया को—
सुरधाम बनाने वाला है.
भूले भटके मानवगण को,
दानवता से दूर हटा,
मानवता का मधुर-मधुर शुभ—
पाठ पढ़ाने वाला है.
क्यों न कहो, बधाईयां दें हम,
गुणी 'गणेश' मुनीश्वर को.
बन्द जिन्होने कर दिखलाया,
गागर में ही सागर को.

दीक्षित-शिक्षित कर पर जिनने,
इनको योग्य बनाया है.
असल बधाइयां देते हैं हम,
पूज्य मुनीश्वर पुष्कर को.

—चन्दन मुनि [पंजाबी]

महक उठा कवि सम्मेलन

—कवयिता : गणेश मुनि शास्त्री, साहित्यरत्न
—प्रकाशन अमर जैन साहित्य सदन, जोधपुर
—मूल्य : एक रुपया पचास पैसे

★'महक उठा कवि सम्मेलन' एक सौ एक मुक्तको की भीनी सुरभि से महक रहा है कवि ने अपने इन तमाम मुक्तको मे कमाल की सूझ भरदी है व्यगोक्ति के मर्म को छूनेवाली व्यजना, लाक्षणिकता की विपुल-बहुल श्रृ खला कल्पना की उर्वर भूमि पर युगवोध का सम्यक् समाहार उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अलकारो का चमत्कार एव भावो को जन-मन तक पहुँचाने वाली भाषा का सरल सरस प्रवाह पद-पद पर छलकता नजर आता है.

. ...मुक्तक काव्य परपरा मे प्रस्तुत पुस्तक सदा सम्मान की दृष्टि से याद की जाएगी

—श्री अमर भारती

★'महक उठा कवि-सम्मेलन' आधुनिक युगके समर्थ चिंतक कविरत्न श्री गणेश मुनिजी शास्त्री की एक मौलिक कृति है. इसमें कुछ तुक्कत-मुक्तक ऐसे हैं, जिन्हे देखते ही जिह्वा झूम-झूम कर गुनगुनाने लगती है. काव्य-जगत मे मुनिश्री की प्रस्तुत कृति एक नयी अभिव्यञ्जना सिद्ध होगी.

—साध्वी उज्ज्वलकुमारी

★'भाव भाषा और शैली तीनो दृष्टियो से पुस्तक सुन्दर एव सग्रहणीय है इसमे कविवर श्री गणेश मुनि शास्त्री के विचार और अनुभूति का सुन्दर समन्वय प्रस्तुत हुआ है

—विजय मुनि शास्त्री

'महक उठा कवि सम्मेलन' जब,
पुस्तक जरा उठा देखी.
फुलझड़ियां देखीं मुक्तक की तो,
सब की अजब अदा देखी.
गुणी 'गणेश' मुनीश्वर जी की
लखा लेखनी चकित हुआ.
ऐसी सुलझी अन्य कहीं पर,
कम ही काव्य-कला देखी.

—चन्दन मुनि [पंजाबी]

★'महक उठा कवि सम्मेलन' के मुक्तक आकार की दृष्टि से छोटे है, किन्तु मानव के मन-मस्तिष्क को प्रभावित करने एव जीवन को नया मोड देने मे ये अणु से कम शक्तिशाली नही है ये मानव मन पर जादू-सा असर करनेवाले है

छपाई-सफाई, आकार-प्रकार तथा कलापूर्ण आवरण पृष्ठ अत्यधिक आकर्षक है

—मुनि समदर्शी

★ऐसी सुन्दर प्रभावोत्पादक कृति के लिए कवि को हृदय की गहराई से बधाई.

—महेन्द्र मुनि 'कमल'

गीतों का मधुवन

—रचयिता : गणेश मुनि शास्त्री

—प्रकाशक : अमर जैन साहित्य सदन, जोधपुर

—मूल्य : एक रुपया

★शब्दावलिया सरस सब,
शिक्षा और कमाल.
'गीतो का मधुवन' लखा,
[illegible]

'मुनि गणेश' शास्त्री, गुणी,
सरस्वती अवतार.
निशदिन ही जिनकी रहे,
झंकृत गीत सितार.

—चन्दन मुनि [पंजाबी]

इसके अतिरिक्त मुनि श्री की कई महत्वपूर्ण रचनाएँ अमुद्रित है समय और सुविधा के अनुसार वे भी पाठको के कर कमलो मे पहुँच सकेगी, ऐसा विश्वास है. ●

शीघ्र प्रकाशित होने वाला साहित्य—

- सुबह के भूले
- विचारदर्शन
- प्रेरणा के बिन्दु

पुस्तक प्राप्तिस्थल :

लक्ष्मी पुस्तक भण्डार
गाधी मार्ग, अहमदाबाद-१

मत्री :

अमर जैन साहित्य संस्थान
उदयपुर (राजस्थान)

मुनिश्री जी की महत्त्वपूर्ण रचनाएं

१ आधुनिक विज्ञान और अहिंसा
२. अहिंसा की बोलती मीनारे
३ इन्द्रभूति गौतम एक अनुशीलन
४ प्रेरणा के बिन्दु
५ विचार दर्शन
६. वीणा वाणी
७. महक उठा कवि सम्मेलन
८. जलते दीप
९ विचार रेखा
१०. जीवन के अमृत कण
११ धरती के फूल
१२. प्रकृति के अचल मे
१३ तब और अब
१४. सुबह के भूले
१५ अनगूंजे स्वर
१६. गीतो का मधुवन
१७ सगीत रश्मि
१८ गीत झकार
१९ गणेश गीताञ्जलि
२० गीत गुञ्जार (सम्पादित)
२१ नूतन गीत